SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 21 • ISSUE 07 • SEPTEMBER 2022

हिन्दी मासिक

सितम्बर 2022

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

आप सल्ल. नैतिकता के शिक्षक,
और मानवता के मार्ग दर्शक हैं,
आपकी मुख्य और प्रसिध्द विशेषता
समस्त मानव जाति के लिए करुणा
और दया है।

(मौलाना वाज़ेह रशीद हसनी नदवी रह.)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै० मुहम्मद राबे हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007
सितम्बर 2022 वर्ष 21 अंक 07

हम अपने अक़ीदे पर अटल हैं!

इस्लाम एक ऐसी मम्लकत है जिसकी सीमाएं अटल हैं, वह सीमाएं अल्लाह की ओर से निश्चित हैं, ज़माने के उलट फेर से न वह टूट सकती हैं और न वह हिल सकती हैं, इस्लामी ढाँचा जिन क़ानूनी दस्तावेज़ों और प्राकृतिक सिद्धान्तों पर आधारित है वह अल्लाह की मरज़ी के अनुकूल है, उसमें वर्तमान और भविष्य की ज़रूरतों का लिहाज रखा गया है।

इस स्पष्ट वास्तविकता के बाद हम नहीं चाहते कि किसी ओर से इस्लामी अक़ीदे या मुस्लिम पर्सनल लॉ में हस्तक्षेप किया जाए, यह हमारा संवैधानिक अधिकार है।

(हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यब साहब रह0)
भूत पूर्व अध्यक्ष आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
इल्म तरक़्क़ी का ज़ीना	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	09
रब की बन्दगी और दुआ	हज़रत मौ0 सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी	11
रमज़ानुल मुबारक के बाद	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	14
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	20
भारतीय संविधान की कहानी	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	23
आज़ादी का अमृत महोत्सव	जमाल अहमद नदवी	27
दीन व मिल्लत के एक निःस्वार्थ	मुहम्मद इस्हाक़ नदवी	28
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	30
शिक्षा एक बुन्यादी ज़रूरत	इं0 जावेद इक़बाल	32
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	34
दुआ–ए–मग़फिरत	इदारा	35
कहाँ ले जायेगी अतीत से	मधूसूदन आनन्द	37
जवाँ साल आलिमे दीन	इदारा	39
अलसी के छोटे बीजों में छिपे	डॉ0 सीएम पांडेय, आयुर्वेदाचार्य	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अपील बराए तामीर स्टॉफ क्वाटर्स	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-तौबाः-

अनुवाद–

और मुहाजिरों और अंसार में से पहले आगे बढ़ने वाले और जिन्होंने बेहतर तरीक़े पर उनका अनुसरण (पैरवी) किया अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए और अल्लाह ने उनके लिए ऐसी जन्नतें तैयार कर रखी हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं, उसी में वे सदा रहेंगे यही बड़ी सफलता है [1](100) और तुम्हारे आस–पास के कुछ गंवार मुनाफ़िक़ और कुछ मदीने वाले भी निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, आप उनको नहीं जानते हम उनसे अवगत हैं हम उनको जल्द ही दो बार अज़ाब देंगे फिर वे बड़े अज़ाब की ओर पलटाए जाएंगे[2](101) दूसरे वह हैं जिन्हें अपने पाप स्वीकार हैं उन्होंने अच्छे काम के साथ कुछ दूसरे बुरे काम भी मिला रखे हैं उम्मीद है कि अल्लाह उनको माफ़ कर देगा बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है(102) आप उनके मालों से सदक़ा ले लीजिए, आप उनको उसके द्वारा पवित्र कर देंगे और उनके लिए दुआ कीजिए आपकी दुआ उनके लिए सुकून (का कारण) हो, और अल्लाह खूब सुनता है खूब जानता है(103) क्या उन्होंने जाना नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है और सदके स्वीकार करता है और अल्लाह ही बहुत तौबा स्वीकार करने वाला बड़ा ही दयालु है(104) और कह दीजिए कि काम किए जाओ तो अल्लाह और उसका पैग़म्बर और ईमान वाले तुम्हारा काम देखेंगे और जल्द ही तुम छिपे और खुले के जानने वाले के पास भेजे जाओगे फिर जो कुछ तुम किया करते थे वह सब तुम्हें बता देगा[3](105) और कुछ वे हैं जिनका मामला अल्लाह का आदेश आने तक स्थगित है चाहे वह उन्हें दण्ड दे या उन्हें माफ़ कर दे और अल्लाह ख़ूब जानता है हिकमत रखता है[4](106) और जिन्होंने मस्जिद बनाई नुक़सान पहुँचाने के लिए और कुफ़्र के लिए और ईमान वालों में फूट डालने के लिए और उस व्यक्ति को घात व दांव लगाने की जगह उपलब्ध कराने के लिए जो पहले से ही अल्लाह और उसके रसूल से लड़ता रहा है और क़समें खाते हैं कि हमने तो केवल भलाई ही का इरादा किया था और अल्लाह गवाह है कि वे पक्के झूठे हैं(107) आप कभी भी उसमें न खड़े हों[5], हाँ वह मस्जिद जिसकी आधारशिला पहले ही दिन से तक़्वे पर पड़ी उसका हक़ ज़ियादा है कि आप उसमें खड़े हों उसमें वे लोग हैं जो खूब पाकी को पसंद करते हैं और अल्लाह ख़ूब पवित्र रहने वालों को पसंद करता है[6](108) भला वह जिसने अपने भवन की आधारशिला अल्लाह के डर और उसकी खुशी पर रखी वह

बेहतर है या वह जिसने अपने भवन की आधारशिला खाई के ऐसे कगार पर रखी जो गिरने ही वाली है बस उसको ले कर दोज़ख की आग में ढ़ह पड़ी और अल्लाह अत्याचारी लोगों को राह नहीं देता(109) उनका वह भवन जो उन्होंने बनाया बराबर उनके दिलों में कसक बना रहेगा यहाँ तक कि उनके दिल टुकड़े टुकड़े हो जाएं और अल्लाह ख़ूब जानता हिकमत रखता है[7](110) बेशक अल्लाह ने ईमान वालों से उनके मालों और जानों को इस बदले में ख़रीद लिया है कि उनके लिए जन्नत है वे अल्लाह के रास्ते में जंग करते हैं तो मारते हैं और मारे जाते हैं इस पर पक्का वादा है तौरेत में भी और इंजील में भी और कुरआन में भी अल्लाह से बढ़ कर क़रार में पक्का और कौन होगा बस तुम अपने उस मामले पर जो तुमने उससे कर लिया है खुशियां मनाओ और यही बड़ी सफलता है[8](111)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. देहात के ईमान वालों के बाद अब साबिक़ीन–ए–अव्वलीन का उल्लेख है जो ईमान में पहले दाखिल हुए उन्होंने हर प्रकार की कुर्बानियां (बलिदान) पेश की क्रमशः वे बयान हुई हैं।

2. कुछ लोगों का निफ़ाक़ बड़ा कठोर है उनके लिए दोहरा अज़ाब है एक दुनिया में अपमान और आंतरिक घुटन जो इस्लाम की उन्नति से बढ़ती ही रही दूसरे कब्र का अज़ाब।

3. इसमें विशेष रूप से उन लोगों का उल्लेख है जो गफ़लत (अचेतन) के कारण युद्ध में न निकल सके बाद में उनको बड़ा पछतावा हुआ उनमें से कुछ लोगों ने अपने आपको खम्भों से बांध दिया फिर जब यह आयत उतरी तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी माफ़ी का एलान कर दिया और इसकी खुशी में वे सदक़े ले कर आए, फिर आगे उनको चेतावनी दी गई कि अपने कामों को ठीक रखो अल्लाह देख रहा है, गुनाहों को दोहराया न जाए यह तौबा के विरुद्ध बात है।

4. जो मुसलमान सुस्ती के कारण युद्ध में नहीं गए यह उनकी दूसरी क़िस्म है, इसमें केवल तीन लोग थे उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साफ़ साफ़ बात बता दी, उनका विवरण आगे आयेगा।

5. अबू आमिर खज़रजी नाम का एक व्यक्ति था इस्लाम से पहले वह राहिब (संयासी) हो गया और मदीने में प्रभाव पैदा कर लिया जब इस्लाम प्रबल हुआ तो वह इस्लाम का दुश्मन बन गया और हर अवसर पर मुसलमानों को नुक़सान पहुंचाने की रणनीति बनाता रहा, यह मस्जिद–ए–ज़ेरार उसके प्रस्ताव से बनाई गई और इस्लाम दुश्मन साज़िशों का उसको गुप्त अड्डा बनाने की रणनीति बनाई गई ''लिमन–हारबल्लाह व रसूलहु'' में उसी व्यक्ति की ओर संकेत है, यह मस्जिद–ए–कुबा से कुछ दूरी पर बनाई गई और बनाने वालों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रार्थना की कि आप पहले उसमें नमाज़ पढ़ लें, आपने कहा कि तबूक़ से वापसी पर मैं आऊँगा, फिर यात्रा के दौरान ही यह आयतें उतरीं और सारी कलई खुल गई

शेष पृष्ठ..13...पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

दोस्ती हो या दुश्मनी खुदा के लिए होने का बयानः—

अल्लाह तआ़ला का फरमान है—

अनुवादः— *जो लोग अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, तुम उनको खुदा और रसूल के दुश्मनों से दोस्ती करते हुए न देखोगे, चाहे वो उनके बाप, या बेटे, या भाई या खानदान के ही लोग क्यों न हों, ये वो लोग हैं जिनके दिलों में खुदा ने ईमान (पत्थर की लकीर की तरह) लिख दिया है, और फैज़े गैबी (अप्रत्यक्ष शक्ति) से उनकी मदद की है, और वह उनको उन जन्नतों में दाखिल करेगा जिनके निचले भाग में नहरें बह रही हैं, वो उनमें हमेशा रहेंगे, खुदा उनसे खुश है और वो खुदा से खुश।*

(सूरः मुजादलः 22)

अनुवादः— *तुम्हारे दोस्त तो खुदा और उसके रसूल और ईमान वाले लोग ही हैं, जो नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात देते हैं और (खुदा के आगे) झुकते हैं। (सूरः माइदः 55)*

अनुवादः— *ईमान वालों को चाहिए कि वो अपने सिवा काफिरों (अवज्ञाकारियों) को दोस्त न बनाएं और जो ऐसा करेगा उससे खुदा का कोई वादा नहीं, हाँ! अगर इस विधि से तुम उन (की बुराई) से बचाव का रास्ता पैदा करो (तो कोई हर्ज नहीं)।*

(सूरः आले इमरान—28)

अर्श का साया (खुदाई सिंहासन की छाया):—

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह क़यामत के दिन फ़रमाएगाः मेरी महानता व बड़ाई की वजह से जो आपस में मुहब्बत करते थे वो कहाँ हैं? आज मैं उन पर साया करूँगा, आज मेरे साये के सिवा और कोई साया नहीं है। (मुस्लिम)

अल्लाह की मुहब्बत उन लोगों के लिएः—

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ये फरमाते हुए सुना कि अल्लाह तआला का फरमान हैः मेरे लिए आपस में मुहब्बत करने वालों और मेरे सम्बन्ध से एक दूसरे के पास बैठने वालों और मेरी खातिर एक दूसरे से मिलने—जुलने वालों, और मेरी ही खुशी के लिए एक दूसरे पर खर्च करने वालों के लिए मेरी मुहब्बत वाजिब हो गई।

(मुअत्ता इमाम मालिक)

मुसलमान भाई से मुलाकात के लिए जानाः—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि एक आदमी अपने मुसलमान भाई की मुलाकात के लिए दूसरे मुहल्ले में गया, अल्लाह तआला ने उसके रास्ते में एक फरिश्ता बिठा दिया, जब वह आदमी उसके पास से गुज़रा तो फरिश्ते ने कहाः कहाँ जा रहे हो? उस आदमी ने जवाब दिया, मैं इस मुहल्ले में अपने भाई से मिलने जा रहा हूँ, फरिश्ते ने कहाः क्या उसने तुम पर कोई एहसान किया है जिसको निभाने जा रहे हो? उसने कहा नहीं! मुझको उससे केवल

अल्लाह के लिए मुहब्बत है, फरिश्ता बोलाः मैं अल्लाह का कासिद हूँ, बेशक अल्लाह ने तुम से मुहब्बत की जैसे तुमने उसके लिए मुहब्बत की।

(मुस्लिम)

अल्लाह की मुहब्बत सब से ज़्यादा होः–

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया– तीन बातें जिसके अन्दर होंगी ईमान की मिठास महसूस करेगा। एक तो यह कि अल्लाह और उसका रसूल (सन्देष्टा) अन्य से ज़ियादा प्रिय हो, दूसरी बात यह है कि वह किसी से मुहब्बत करे तो अल्लाह ही के लिए करे, तीसरी बात यह कि कुफ्र (अवज्ञा, इस्लाम लाने से पहले की अवस्था) की ओर वापस जाना जिससे अल्लाह ने उसको बचाया है उतना ही ना पसन्द करे जितना कि आग में डाला जाना ना पसन्द करता है। (बुखारी)

सात तरह के लोग अर्श के साये में :–

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सात आदमी हैं जिन पर अल्लाह तआला कयामत के दिन अपना साया करेगा, जिस दिन अल्लाह के साये के सिवा कोई साया न होगा, (1) सही–सही इन्साफ करने वाला हाकिम। (2) वह नवजवान जिसने अल्लाह की इबादत में उन्नति पाई। (3) नमाज़ का ऐसा पाबन्द आदमी जिसका दिल हमेशा मस्जिद में लगा रहे। (4) वो दो आदमी जो अल्लाह के लिए मुहब्बत करें, मिलें तो उसी के लिए मिलें, जुदा हों तो उसी के लिए जुदा हों। (5) ऐसा आदमी जिसको बड़े घर की सुन्दर औरत बुराई करने के लिए बुलाए और वह यह कहता हुआ इन्कार कर दे कि मैं अल्लाह से डरता हूँ। (6) ऐसा आदमी जो इस तरह छुपा कर सदक़ा करे कि बायां हाथ भी न जाने कि दाहिने हाथ ने क्या खर्च किया है (करीब से करीब आदमी को भी उसके सदके की जानकारी न हो) (7) ऐसा आदमी जिसने एकान्त में अल्लाह को याद किया और उसके आँसू बहने लगे। (बुखारी)

कोई भी काम निष्काम भाव से और केवल अल्लाह ही के लिए करना चाहिएः–

हज़रत अबूज़र रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया– जिसने खुदा के लिए मुहब्बत की और खुदा के लिए गुस्सा किया उसने अपना ईमान पूरा कर लिया। (अबू दाऊद)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया– सबसे बेहतर अमल यह है कि किसी से मुहब्बत हो तो अल्लाह के लिए हो और किसी से नाराज़ हो तो अल्लाह ही के लिए हो। (अबू दाऊद)

मुसलमान का महत्वः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया– जो आदमी किसी बीमार आदमी की इयादत (कुशल क्षेम) के लिए जाता है या अल्लाह के लिए किसी मुसलमान भाई से मुलाक़ात के लिए जाता है तो एक पुकारने वाला पुकारता है, मुबारक हो तेरा चलना, मुबारक हो, तुमने जन्नत में एक जगह बना ली। (तिर्मिजी)

जिससे मुहब्बत हो उसे बता देः–

हज़रत मिकदाम बिन मअदी करिब रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– जब आदमी अपने किसी मुसलमान भाई से मुहब्बत करे तो उसको चाहिए कि वह उसको बता दे कि मैं तुम से मुहब्बत करता हूँ।

(अबू दाऊद व तिर्मिजी)

❖❖❖

सम्पादकीय

इल्म, तरक़्क़ी का ज़ीना

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

इल्म इन्सान को अंधकार से प्रकाश की ओर लाता है, अज्ञान से ज्ञान की ओर लाता है, इन्सान जब अपने को इल्म से सुसज्जित कर लेता है तो अन्य जातियों के सामने वह सर्वश्रेष्ठ हो जाता है, इन्सान की विशेषता इल्म है, यदि इल्म इन्सान की विशेषता न रहे तो इन्सान और पशु का अन्तर समाप्त हो जायेगा, और इन्सान पशुओं के झुण्ड में पहुँच जाएगा, चेतना और बुद्धि जो इन्सान को दी गई है वह पशुओं में नहीं है इस अन्तर और वास्तविकता को कुर्आन ने बड़े प्रभावशाली ढंग से वर्णन किया है *''उनके पास दिल है मगर वे उनसे सोचते नहीं, उनके पास आँखें हैं मगर वे उनसे देखते नहीं। उनके पास कान हैं मगर वे उनसे सुनते नहीं, वे जानवरों के समान हैं बल्कि उनसे भी ज़ियादा गए गुज़रे, ये वे लोग हैं जो ग़फ़लत में खो गए हैं।''*

(सूरः अल–आराफ़–179)

इल्म इन्सान की मौलिक आवश्यकता है कुर्आन जो 23 साल में अर्शे इलाही से धरती पर उतरा उसकी सबसे पहली आयत ''इक़रा'' से शुरु होती है उसका अर्थ ''पढ़ो'' है, *''अपने रब का नाम लेकर पढ़ो जिसने सबको पैदा किया, इन्सान को ख़ून के लोथड़े से पैदा किया, पढ़ते रहो और आपका रब ही सबसे बढ़ कर करम वाला है जिसने क़लम से इल्म सिखाया, इन्सान को ऐसा इल्म सिखाया जो इन्सान जानता न था''।*

(सूरः अलक़ः 1–5)

इस समय कष्ट दायक और दुखदायक बात यह है कि मुस्लिम क़ौम जिसको अल्लाह तआला ने ''ख़ैर उम्मत'' बेहतरीन उम्मत से संबोधित किया है वह इल्म से महरूम और वंचित है, इस समय इस क़ौम की पहचान और शिनाख़्त जिहालत है, गाँव और शहर एक ही स्तर पर हैं, इसका अन्दाज़ा उस समय होता है, जब वार्षिक परीक्षाओं का रिज़ल्ट सामने आता है, आँखें तरस्ती और दिल तमन्ना करता है कि पास होने वाले उच्च श्रेणी के बच्चों की लिस्ट में किसी मुसलमान बच्चे का नाम होता, हमारे लीडर ''सच्चर'' कमेटी का रिफ़्रेन्स देकर ख़ामोश हो जाते हैं, सच्ची बात यह है कि हमें अपनी इज़्ज़त व ज़िल्लत का एहसास नहीं रहा, इल्म ही एक ऐसा ज़ीना है जिस पर चढ़ कर हम तरक़्क़ी की राहों पर चल सकते हैं और सम्माननीय स्थान प्राप्त कर सकते हैं, मुसलमान बच्चों को शिक्षा से जोड़ने के लिए अभियान चलाना होगा, व्यक्तिगत रूप से भी और सामूहिक रूप से भी, निःस्वार्थ हो कर यह काम करना होगा, इस बड़े उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अपनी जीवन पद्धिति बदलनी होगी, सबसे पहले अपने नबी सल्ल0 का यह फ़रमान अपने सामने रखिए ''कि यह मिल्लत एक शरीर के समान है यदि शरीर के किसी एक अंग में दर्द होता है तो पूरा शरीर उस दर्द को महसूस करता है और बेचैन होता है'' दूसरी बात यह कि मिल्लत के हर बच्चे को अपना बच्चा समझिये, तीसरी बात यह

कि अपनी दौलत को झूठी इज़्ज़त और नाम व नमूद के लिए न ख़र्च की जाए, बल्कि ज़ियादा से ज़ियादा आपकी दौलत मुसलमान बच्चों की तालीम पर ख़र्च हो, चलते फिरते अगर आप जायज़ा लें, ज़रा देर में आप समझ जाएंगे कि मुसलमान बच्चे तालीमी हैसियत से कितनी गिरावट पर हैं। सबसे बड़ी संख्या न पढ़ने वालों की है, कुछ बच्चे जो स्कूल तक गये वह अधूरी शिक्षा छोड़ कर चले आये, उसकी वजह यह है कि माँ–बाप अनपढ़ हैं वह इल्म की अहमियत नहीं समझते, इसलिए घरेलू सहयोग नहीं मिला, कुछ बच्चे यह कहते हुए मिलते हैं कि अम्मा–अब्बा बहुत ग़रीब हैं इसलिए तालीम छोड़नी पड़ी, हज़ारों में दो चार होते हैं जो आला तालीम हासिल करते हैं। मुसलमान बच्चे ज़ियादा तर मोटर गैराज, या ज़रदोज़ी के कारखानों में आँखें फोड़ते नज़र आते हैं। यह जगहें मुसलमान बच्चों की क़त्लगाहें हैं, जहाँ अच्छे ज़हीन और सेहत मन्द बच्चे दफ़न हो जाते हैं। दुनिया की कोई हुकूमत ना अहलों और बेईमानों से नहीं चल सकती, यह दो विशेषताएं हैं जिनके द्वारा इन्सान दूसरों की निगाहों में प्रिय और सम्मानीय बन सकता है और तरक़्क़ी कर सकता है। योग्यता के साथ ईमानदारी शर्त है, सच्चाई और ईमानदारी हमारे दीन का सबसे पहला सबक़ है, उसके बाद योग्यता और क़ाबलियत आला दर्जे की हो, हिन्दुस्तानी मुसलमानों से संबंधित बहुत से मसायल हैं, बुन्यादी मसअला यह है कि वह पस्ती से उठ कर बुलन्दी पर कैसे पहुँचें, इस समस्या का समाधान यह है कि हमारे सौ फ़ीसद बच्चे शिक्षित हों, जिहालत एक बदनुमा दाग़ है जिसे मुस्लिम क़ौम से मिटना चाहिए। हम सबका कर्तव्य है, कि हमारे बच्चे और बच्चियाँ अशिक्षित न रहें, यह बात सिर्फ़ ज़बान तक न हो बल्कि व्यवहारिक और क्रियात्मक हो, शिक्षा के इस प्रोग्राम को सबसे पहले अपने घर से शुरु की जिए फिर अपने महल्ले को लीजिए, इस राह में जो रुकावटें हों उनको दूर करने की कोशिश कीजिए, अपने ज़िम्मे उतना काम लीजिए जिस को आप भलीभांति अनजाम दे सकें, यहाँ तक कि आपका काम आदर्श बन जाए, उसको देख कर दूसरे लोग अनुसरण करें। बहुत पहले अल्लामा इक़्बाल ने कहा था–

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दूस्ताँ वालो
तुम्हारी दास्ताँ तक भी न होगी दास्तानों में

इक़बाल ने जिस समय ये अशआर कहे थे, उस समय पूरा देश गुलामी की ज़नजीरों में जकड़ा हुआ था, इस समय हम आज़ादी की 75वीं सालगिरा मना रहे हैं, सारे देश वासी उन्नति के रास्ते पर हैं, शिक्षा के मैदान में एक पिछड़ा हुआ वर्ग मुस्लिम वर्ग है, जिस क़ौम के पास कुर्आन जैसी आसमानी किताब हो और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 जैसा नबी–ए–बरहक़ हो, वह क़ौम पिछड़ी हुई कैसे हो सकती है, यक़ीनन उस क़ौम ने कुर्आन खोल कर नहीं पढ़ा और उसकी शिक्षाओं पर अमल नहीं किया और उसको पीठ पीछे किया, इसी प्रकार उसने अपने नबी की ज़बानी तारीफ़ की परन्तु उसने अपने प्यारे नबी को दिल में जगह नहीं दी, सुबह से शाम तक की अमली ज़िन्दगी में नबी का विरोध किया, ख़ुशी और ग़मी के मौक़े पर उसने ग़ैरों का तरीक़ा अपनाया, नबी के आदेशों और तरीक़ों को नज़रअन्दाज़ किया, नबी ने ''नमाज़'' को अपनी आँखों की ठन्ढक फरमाया था परन्तु उम्मत की बहुसंख्यक ने उसे अपनी

शेष पृष्ठ..13..पर

रब की बन्दगी और दुआ, कुरआन की रोशनी में

हज़रत मौ0 सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

कुर्आन मजीद में विभिन्न प्रकार से जगह जगह यह बात स्पष्ट की गई है कि आसमान से ज़मीन तक जो कुछ है वह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का पैदा किया हुआ है और वही तनहा सबका मालिक व पालनहार और इबादत के लायक़ है कोई उसका साझीदार नहीं, जो कुछ होता है उसी के हुक्म और फ़ैसले से होता है, सब उसके इल्म व इरादे के अन्तर्गत अमल में आता है कोई भी चीज़ छोटी हो या बड़ी, ऐसी नहीं कि वह अपने आप हो जाती हो, कुर्आन मजीद में यह भी बताया गया है कि यह जो कुछ है अल्लाह ने बे वजह नहीं बनाया उसके हर काम के पीछे एक उद्देश्य है, इन्सान को यह हुक्म दिया गया कि वह उसके उद्देश्य को समझे और अपने को उसके अनुसार अमल करने का पाबन्द बनाये, और इस काम के लिए इन्सान को अन्य मख़लूक़ के मुक़ाबले में विशेषता के साथ ज़िम्मेदार बनाया गया ताकि वह अपने मालिक व पालनहार के आदेशानुसार ज़िन्दगी गुज़ारे और इस धरती पर अपने पालनहार अल्लाह के प्रतिनिधि के रूप में व्यवहार करे, इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए जिस इल्म की आवश्यकता है उसके साधन एकत्र कर दिये गए।

इस विषय में इन्सान को दो प्रकार की जानकारी की आवश्यकता थी, एक वह जिन की आवश्यकता ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए चाहिए, उनको इन्सान अपने ग़ौर व फ़िक्र, रिसर्च और अनुभव से प्राप्त कर सकता है, उन जानकारियों को प्राप्त करने के लिए क्या कोशिश की जाये इसको इन्सान पर छोड़ दिया गया है कि वह अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार काम करे।

इल्म की दूसरी क़िस्म वह है जो इन्सान की सलाहियत के दायरे से ऊपर की है, उसको ग़ैब से बताया गया है, वह इन्सानी इल्म के दायरे में नहीं आती, उसको आसमानी पैग़ाम और तालीमे इलाही के ज़रिये से इन्सान को बताया गया है और वह उस विश्व से सम्बन्धित है जो इन्सान की नज़र से पोशीदा है और अल्लाह की ओर से उतारी हुई किताबों में और अल्लाह के नियुक्त किये हुए रसूलों और फ़रिश्तों के ज़रिये से इन्सान को बताई गई हैं, उनमें इन्सान की पैदाइश का उद्देश्य और पैदा करने वाले की बड़ाई और एहसान को समझने और उसके अनुसार उसका शुक्र अदा करने का तरीक़ा बताया गया, और यह बात स्पष्ट कर दी गई कि उसको पैदा करने वाले की मरज़ी और हुक्म मानने पर बेहतरीन नेमतें दी जायेंगी और उनके विरुद्ध करने पर सख़्त तरीन सज़ाएं दी जायेंगी, कि असंख्य उपकार के बाद भी उसकी अवज्ञा की गई। लेकिन ये नेमतें और ये सज़ा इन्सान की सीमित ज़िन्दगी में नहीं दी जायेंगी, बल्कि इस सीमित ज़िन्दगी में अमल के लिहाज़ से जो जैसा साबित हुआ है दोबारा ज़िन्दगी दे कर उसको उसके अमल पर पुरस्कार या सज़ा मिलेगी, इस बात को मानने और अपने अमल में लाने की कोशिश का हुक्म दिया गया है।

कुर्आन मजीद में आया है ''वह ख़ुदा बड़ा आलीशान है जिसके कब्ज़े में बड़ी सल्तनत है और वह हर चीज़ पर शक्तिमान है, जिसने मौत और

ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हारी जांच पड़ताल करे कि तुम में कौन शख़्स अमल में ज़ियादा अच्छा है''।

(सूरः मुल्क 1–2)

अतः इन्सान के लिए अनिवार्य है कि उसकी ज़िन्दगी में अपने रब पालनहार के उपकार और उसकी बड़ाई को मानने का प्रमाण हो, चूंकि संसार में सब उसी के हुक्म से होता है और हर चीज़ का पूर्ण अधिकार उसी के पास है, लिहाज़ा उससे अपनी भलाई और कामयाबी की दरख़्वास्त भी करते रहना चाहिए यह दरख़्वास्त, दुआ कहलाती है। कुर्आन मजीद में दुआ के नमूने भी दिये गये हैं उन नमूनों से फ़ायदा उठाने का मौक़ा दिया गया है उसकी पहली मिसाल कुर्आन मजीद की पहली सूरत ''सूरः फ़ातिहा'' है जो बहुत ही संक्षिप्त होने के बावजूद बहुत ही व्यापी है, उसके शुरु में अल्लाह की महानता और उसके उच्च स्थान और उसके गुणों का स्वीकरण किया गया, फिर उससे अपने लिए भलाई और बेहतरी की दरख़्वास्त की गई है, और यह सब बातें सात आयतों में बहुत व्यापी ढंग से समो दी गई हैं। सूरः फ़ातिहा का अनुवाद–

''शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही मेहरबान और रहम करने वाला है। प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे जहानों का रब है। जो बड़ा ही मेहरबान और दया करने वाला है। बदला दिये जाने के दिन का मालिक है। हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं। हमें सीधा मार्ग दिखा, उन लोगों का मार्ग जो तेरे कृपा पात्र हुए। जो प्रकोप के भागी नहीं हुए, जो भटके हुए नहीं हैं।''

अल्लाह तआला ने इन्सानों की रहनुमाई और नसीहत के लिए जो नबी भेजे उनकी ज़िन्दगी की प्रभावकारी घटनाएं और आचार व्यवहार को स्पष्ट रूप में बताया गया, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पहले इन्सान हुए, उनका उल्लेख कई जगह किया गया ताकि इन्सान को जो अहमियत दी गई उसका पता चले उनसे अपने रब के हुक्म के सिलसिले में एक भूल हो गई थी, जिसकी उन्होंने माफ़ी मांगी, अल्लाह ताआला ने कुर्आन मजीद में उनकी ग़लती और उनके माफ़ी मांगने का ज़िक्र उनके शब्दों में किया है कि उन्होंने भूल से ग़लती की, फिर माफ़ी मांगी।

''और ऐ आदम, तू और तेरी पत्नी, दोनों इस जन्नत में रहो, जहाँ जिस चीज़ को तुम्हारा मन चाहे खाओ, मगर इस पेड़ के पास न फटकना वरना ज़ालिमों में से हो जाओगे, फिर शैतान ने उनको बहकाया ताकि उनकी गुप्त इन्द्रियाँ जो एक दूसरे से छुपाई गई थीं उनके सामने खोल दे, उसने उनसे कहा, ''तुम्हारे रब ने तुम्हें जो इस पेड़ से रोका है इसका कारण इसके सिवा कुछ नहीं है कि कहीं तुम फ़रिश्ते न बन जाओ, या तुम्हें हमेशा की ज़िन्दगी प्राप्त न हो जाए। और उसने क़सम खा कर उनसे कहा कि मैं तुम्हारा सच्चा हितैषी हूँ। इस तरह धोखा दे कर वह उन दोनों को धीरे धीरे अपने ढप पर ले आया। आखिरकार जब उन्होंने उस पेड़ का मज़ा चखा तो उनकी गुप्त इन्द्रियाँ एक दूसरे के सामने खुल गईं और वे अपने शरीर को जन्नत के पत्तों से ढांकने लगे। तब उनके रब ने उन्हें पुकारा ''क्या मैंने तुम्हें इस पेड़ से न रोका था और न कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है?'' दोनों बोल उठे, ''ऐ, रब हमने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, अब अगर तूने हमें माफ़ न किया और दया न की तो

यक़ीनन हम तबाह हो जाएंगे''। कहा ''उतर जाओ तुम एक दूसरे के दुश्मन हो, और तुम्हारे लिए एक निश्चित अवधि तक ज़मीन में ठहरने की जगह और जीवन सामग्री है''। और कहा, ''वहीं तुमको जीना और वहीं मरना है और उसी में से तुमको आख़िरकार निकाला जायेगा। फिर उनके बाद आने वाली नस्लों में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम नबी हुए, उन्होंने अपने परवरदिगार के पैग़ाम को भली भांति इन्सानों तक पहुंचाया, इसके साथ एक मौक़े पर अपने एक नालायक़ और सख़्त नाफ़रमान बेटे की सिफ़ारिश पेश की, कि उसे माफ़ कर दिया जाए, अल्लाह ने उनको बताया कि बुरे बेटे को बेटा समझना ही उचित नहीं, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने ग़लती स्वीकार की, जिसकी माफ़ी चाही, दोनों बातों का उल्लेख क़ुर्आन मजीद में इस प्रकार है– ''और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा, ऐ मेरे रब मेरा बेटा तो मेरे घर वालों ही में है और तेरा वादा भी बिल्कुल सच्चा है और तू तो हर हाकिम के ऊपर हाकिम है, अल्लाह ने फ़रमायाः ऐ नूह! यह तुम्हारे घर वालों ही में से नहीं, यह एक बिगड़ा हुआ व्यक्ति है, सो मुझसे ऐसी चीज़ की दरख़्वास्त न करो जिसकी तुम्हें ख़बर न हो, मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ कि तुम (आइन्दा कहीं) नादान न बन जाओ, नूह बोले, ऐ मेरे, परवरदिगार मैं तुझ से पनाह मांगता हूँ कि मैं आइन्दा तुझ से ऐसी चीज़ की दरख़्वास्त करूँ जिसकी मुझे ख़बर न हो और अगर तू मेरी मग़फ़िरत न करे और मुझ पर रहम न करे तो मैं बरबाद हो जाऊँगा।

(सूरः हूद आयत नं0 45–47)

❖❖❖

इल्म तरक़्क़ी का ज़ीना....

ज़िन्दगी से निकाल दिया, नबी करीम सल्ल0 की सैकड़ों हदीसें इन्सान की अच्छी और कामयाब ज़िन्दगी गुज़ारने की ज़मानत हैं, आपके सामने सिर्फ़ एक हदीस नबवी पेश की जा रही है उसको सामने रख कर अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा लीजिये, वह हदीस ईमान को परखने की कसौटी है– ''तुम में से कोई शख़्स मोमिन कामिल नहीं, जब तक उसकी इच्छाएं हमारी लाई हुई शरीअ़त के मुताबिक न हों''। हमने अपनी इच्छाओं को ऊपर रखा, अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों को भुला दिया।

फ़ैसला तेरा तेरे हाथों में है!

❖❖❖

क़ुर्आन की शिक्षा.....

फिर आपके आदेशानुसार वह मस्जिद के नाम से साज़िशों का अड्डा ढा कर बरबाद कर दिया गया।

6. यह मस्जिद–ए–क़ुबा और क़ुबा वासियों की प्रशंसा है, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब उनसे पूछा कि तुम पवित्रता का कौन सा तरीक़ा अपनाते हो तो उन्होंने कहा कि हम ढेलों के बाद पानी का प्रयोग करते हैं।

7. उनके इस दुष्कर्म की सज़ा अल्लाह ने यह दी कि मौत तक निफ़ाक़ ही उनके सिर थोप दिया गया और हिदायत की तौफ़ीक़ छिन गई, दिल के टुकड़े–टुकड़े होना मौत या क़यामत की ओर इशारा है और यहां संदेह का अर्थ निफ़ाक़ है।

8. इससे अधिक लाभप्रद व्यवसाय और महान सफलता और क्या होगी कि अल्लाह ने हमारी जानों और मालों को जो उसी का है जन्नत के बदले खरीद लिया, अब इनका प्रयोग उसी के बताए हुए तरीक़े पर होगा तो बदले में इन्शाअल्लाह जन्नत मिलेगी

❖❖❖

रमज़ानुल मुबारक के बाद पूरा साल कैसे गुज़ारें

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

हि0अ0: आफ़ताब आलम नदवी ख़ैराबादी

रमज़ान एक ऐसा महीना है जिससे ईमान को ताक़त और एनर्जी हासिल होती है।

सबसे बड़ा मसअला ये होता है कि उसके बाद उसकी हिफ़ाज़त किस तरह की जाये इसलिए जहां दौलत होती है वहीं डाकू और चोर जाते हैं, जहां कुछ नहीं होता वहां किसी को परवाह नहीं होती, ग़रीबों के यहाँ न चोर जाते हैं, न डाकू, तो सबसे बड़ा मसअला अपनी हिफाज़त का होता है, रमज़ान में अल्लाह ने जो सौग़ात दी है ईमान की जो ताक़त मिली है उसको महफूज़ रखना ज़रा मुश्किल काम है, इसीलिए हज़राते मशायेख कहते हैं कि किसी कैफ़ियत को हासिल करना आसान है, लेकिन उसको बाक़ी रखना मुश्किल है, आदमी कभी जोश में और हिम्मत जुटा कर किसी चीज़ को हासिल कर सकता है लेकिन फ़िर उसको संभाल कर रखना बड़ा मुश्किल होता है, रमज़ान में एक जोश होता है, आदमी कोशिश करता है, मेहनत करता है, बहुत कुछ हासिल करता है, लेकिन रमज़ान गुज़रने के बाद शयातीन छोड़ दिये जाते हैं, और वो ऐड़ी चोटी का ज़ोर लगाते हैं कि जो नेमत मिली है, वो नेमत हर लिहाज से छीन ली जाये और अल्लाह की जो मुहब्बत दिल के अन्दर होती है, वो नहीं चाहता कि इस तरह की चीज़ें बाक़ी रहें, तो वो ऐसे मसायल में उलझा देता है, कि आदमी आहिस्ता आहिस्ता उन चीज़ों को भूलता जाता है, इसीलिए एक बात ये कही जाती है कि अच्छी कैफ़ियत का हासिल हो जाना अल्लाह की बड़ी नेमत है लेकिन इसको बाक़ी रखने के लिए ज़रूरी है, कि आदमी ऐसी संगत और ऐसी मजलिसों से बचे जिसमें ज़्यादा तर बेकार बातें हों, इसका बड़ा असर पड़ता है जो कैफियत हासिल हुई है वो आहिस्ता आहिस्ता खत्म हो जाती है, तो इसमें ज़रा हिफ़ाज़त की ज़रूरत होती है।

हाफ़िज़ शीराज़ी के एक शेर का अनुवाद हैः ''पीर की सबसे पहली नसीहत इस बात की ताकीद है कि बुरों की संगत से बचो''।

रमज़ान के महीने में जो कुछ भी हासिल हुआ उसकी हिफ़ाजत की ज़रूरत है, अगर्चे लम्बा वक़्त गुज़र चुका है, ये बात तो रमज़ान के फौरन बाद कहने की है, और करने की है, कहने वाला भी ज़रूरत मन्द है, ऐसा नहीं कि मैं कोई और बात कह रहा हूं, जिसकी मुझे ज़रूरत नहीं, ये एक आपसी चर्चा है, हम सबको इसकी ज़रूरत है, कि रमज़ान में जो कुछ मिला तो कम से कम अगले रमज़ान तक तो बाक़ी रहे, मैं अक्सर इसकी मिसाल देता हूं कि जैसे बैट्री चार्ज होती है, जितनी चार्जिंग उतने वक्त तक वो चलेगी, तो कम से कम ये रमज़ान का पूरा महीना है इसमें इतनी चार्जिंग होनी चाहिए और अल्लाह ने उसमें इतनी चार्जिंग रखी है कि कम

से कम साल भर चले।

इमाम सर हिन्दी मुजद्दिद अल्फ़सानी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे जिसका रमज़ान अच्छा गुज़रा, उसका साल अच्छा गुज़रता है, अच्छा गुज़रने का क्या मतलब है? आदमी उससे फायदा उठाता है, आदाब का ख्याल रखता है, रोज़ों का नमाज़ का एहतिमाम तो करता ही है, कोई भी ईमान वाला अल्लाह का बंदा हो और रमजान के बाद रोजे और नमाज़ का एहतिमाम न करे तो इससे बड़ी महरूमी क्या है? वो तो हर ईमान वाला करता है, लेकिन उसके साथ उससे जायद कुर्आन करीम की तिलावत का एहतिमाम फिर जो दूसरों के साथ सुलूक सदक़ा व ख़ैरात, फ़िर वो ईमानी कैफ़ियात का इस्तेहज़ार और काम करते वक्त इसका ख्याल कि हम ये क्यों कर रहे हैं, ये चीज़ें ऐसी हैं कि इनका एहतिमाम किया जाये तो बैट्री चार्ज होती है, और जब चार्ज हो जाती है तो फिर साल भर काम आती है और अगर चार्ज ही नहीं हुई है, तो फिर ज़ाहिर है कि उसके बाद क्या मिलेगा? उसके बाद जो नुक़सानात होंगे वो अपनी जगह पर हैं, इसलिए सबसे पहले तो हमें इस पर ध्यान देना चाहिए कि जो कुछ भी रमज़ान में हमें मिला हम उसको बाक़ी रखने की कोशिश करें, ऐसा न हो शैतान जो ताक में है, वो हमें नुक़सान पहुंचा दे।

और दूसरी बात यह है कि ये साल का आग़ाज़ है, रमज़ान के बाद से गोया अमली तौर पर साल का आग़ाज़ होता है, हमारे मदारिस शुरु होते हैं, और ये अल्लाह का फ़ज़्ल है। अलहम्दुलिल्लाह ये इजाज़त भी अब है कि ऑफ लाईन तालीम हासिल कर सकते हैं, इस नेमत से भी हमें फायदा उठाने की ज़रूरत है–

अल्लाह तआला ने हमें मौक़ा दिया तो ऐसा न हो कि हमारी बद आमालियों से कहीं दोबारा मसायल सामने आ जायें और दुशवारियाँ हों।

याद रखिये! जो कुछ होता है वो यूं ही नहीं होता है, इसके पीछे असबाब होते हैं, अल्लाह का एक निज़ामे कुदरत है वो निजामे कुदरत चलता है और अल्लाह की कुदरत का जो निज़ाम है, वो ऐसा है कि उसकी पूरी एक तरतीब है, वो तरतीब से चलता है, जो कुछ होता है, वो अल्लाह के करने से होता है, खुद कुछ नहीं होता, यहाँ तक कि अल्लाह दुशमन को मुसल्लत करता है, अल्लाह तआला मुश्किलों को पैदा करता है, मुसीबतों में डालता है, और ये सब इसलिए होता है, कि यह हमारी बद आमालियाँ हैं, और कोताहियाँ हैं, इन कोताहियों के नतीजे में अल्लाह तआला की तरफ़ से ये फ़ैसले होते हैं–

ये साल का आग़ाज़ है इसमें भी हमें ज़रा सा इस्तिहज़ार की ज़रूरत है, तवज्जो की ज़रूरत है, कि हमें जो वक्त मिला उससे फ़ायदा उठायें और थोड़ी सी कुर्बानी के साथ आगे बढ़ने की कोशिश करें, इसलिए कि बग़ैर कुर्बानी के तो कुछ होता ही नहीं और मशक़्क़त के साथ जो चीज़ मिलती है, अल्लाह तआला उसके अन्दर पायदारी अता फरमाते हैं, अजीब बात है ये कि जो चीज़ बग़ैर मशक़्क़त के मिलती है, सहूलत के साथ मिलती है

उसका समझना ज़रा मुश्किल होता है, वो निकल जाती है, और जो चीज़ मशक़्क़त के साथ मिलती है, वो चीज़ पायदार होती है, तो इसलिए हमें अपने आपको तैयार रखने की ज़रूरत होती है, तो इसलिए हमें ये मौक़ा दिया तो कोशिश करें आगे बढ़ने की, अगर इसमें हमें थोड़ी मशक़्क़त उठानी पड़े तो मशक़्क़त उठायें। और आगे बढ़ें और इसका ध्यान हो कि अल्लाह तआला ने हमें दुनिया में इसलिए नहीं भेजा कि जिस तरह चाहें ज़िन्दगी गुज़ारें बल्कि अल्लाह तआला ने हमें इम्तिहान घर में रखा है, ये दुनिया आज़माईश का घर है और यहां पर आज़माईश के तरीके अलग अलग हैं, शैतान जो उलझाता है और आज़माईशों में मुब्तला कर देता है कि इन्सान को अपने आप को संभालना आसान नहीं होता, इसी तरह और दुनिया की मशक़्क़तें होती हैं, और इसमें कभी कभी ऐसे सख़्त मुश्किलात का सामना करना पड़ता है, कि उसको बर्दाश्त करना आसान नहीं लेकिन अगर आदमी थोड़ी सी नीयत करे, कोशिश करे तो कर सकता है।

अल्लाह तआला ने इन्सान को ऐसा जिस्म दिया है कि इसमें बड़ी सलाहियतें हैं, बड़ी कूव्वते बर्दाश्त है, लेकिन हम इसको इस्तेमाल नहीं करते, और ये तो जानने वाले जानते हैं कि अल्लाह ने ये जो एनर्जी हमारे जिस्म के अन्दर रखी है हम उसका बहुत कम हिस्सा इस्तेमाल करते हैं, अकसर हिस्सा सलाहियतों का जाये हो जाता है, और इसकी वजह ये है कि अब इस दौर में खास तौर से जो सहूलतें पैदा हो गयी हैं, इन सहूलतों की वजह से हमारा जिस्म मशक्कतों का आदी नहीं होता, जब मशक़्क़त होती है तो बर्दाश्त से बाहर होने लगती है, जैसे गर्मी ही है ये गर्मी का बर्दाश्त करना बड़ा मुश्किल मालूम होता है, लेकिन आज से पचास–साठ साल पहले, जब ये ज़रिये नहीं थे, और सख़्त दुशवारियाँ होती थीं, लेकिन आदमी बर्दाश्त करता था, हमने हज़रत मौलाना अली मियाँ रहमतुल्लाहि अलैहि को देखा कि वहाँ रायबरेली में हमारे यहां लाइट आती ही नहीं थी, और पूरी पूरी रात बग़ैर लाइट के गुजरती थी ए0सी0 का ख्याल ही नहीं था, कूलर का मुआमला भी आसान नहीं था, और जब लाइट ही नहीं आती थी तो कूलर क्या? पंखा नहीं चलता था और ऐसी दोपहरी सख्त गर्मियों की जो आज तक हमारे ज़ेहन में हैं, हमें याद है कि आदमी तलाश करता था कि यहां धूप नहीं है, कुछ हवा आ रही है, तो वहां चारपाई डाल दी, लेट गये और वहां हवा क्या आती सिवाये तपिश के, आप ख्याल कीजिए धूप का और उन खुली हुई जगहों का जहां इन्तिज़ाम न हो किसी चीज़ का किसी ऐसी चीज़ का जिससे ठण्डक हासिल हो लेकिन लोग वो सब बर्दाश्त करते थे, बूढ़े लोग भी बर्दाश्त करते थे, अल्लाह तआला ने उनके जिस्म में जो ताक़त रखी थी, उसका उन्होंने इस्तेमाल किया उनके अन्दर कूव्वते बर्दाश्त थी, अब हाल ये है कि लोग ए0सी0 के आदी हो चुके हैं, अब ज़ाहिर है कि इसके बाद ऐसे सख़्त माहौल में बैठना गर्मी में आसान नहीं मालूम हो रहा है लेकिन अल्लाह ने जिस्म ऐसा बनाया है कि वो आहिस्ता आहिस्ता आदी होता है, एकदम से आदी नहीं

होता, और जब आदी होता है तो ऐसा आदी होता है कि हैरत होती है आप अगर देखिये बाज़ लोगों को जो बेचारे गरीब हैं परेशान हाल हैं, वो ऐसे–ऐसे काम करते हैं कि आप गुमान नहीं कर सकते।

अब इसका रवाज खत्म हो गया, वरना पहले जब कोयले के इन्जन होते थे, इसमें जो लोग काम करते थे, आग भड़काई जाती थी वो कोयले डालते थे, और बेचारे इनमें बाज़ रमज़ान के सख्त गर्मी के रोज़े रखते थे कभी कभी सोच कर हैरत होती थी कि कैसे रोज़ा रख सकता है, लेकिन अल्लाह ने जिस्म को ऐसा बनाया है कि आदमी जैसा अपने आपको आदी बना ले वैसा हो जायेगा, हाँ मशक़्क़त होगी, ये नहीं कहा जा सकता कि मशक़्क़त नहीं होगी, लेकिन ऐसा भी नहीं कि आदमी वो काम नहीं कर सकता, सब कर सकता है।

भाई अल्लाह तआला का अजीब निज़ाम है कि आदमी कोशिश करता है, थोड़ी सी मशक्कत उठाता है, तो अल्लाह तआला उसके लिए आसान कर देते हैं, और अपने आपको ऐश का आदी बनाये तो ज़ाहिर है वैसा ही उसका मिज़ाज़ बन जाता है, और उसके लिए मशक़्क़त उठाना बड़ा मुश्किल होता है, लेकिन अल्लाह तआला का निज़ाम ये है कि मशक्कत के साथ जो चीज़ मिलती है, वो पायदार होती है और जो चीज़ आसानी से मिलती है उसमें खतरात होते हैं और वह हाथ से निकल जाती है, हाँ अगर आदमी अल्लाह की रज़ा की नीयत से और ईमानी जज़्बे के साथ आगे बढ़ने की फ़िक्र करे तो आसानियां भी हैं और अल्लाह तआला की मदद भी होती है, अल्लाह फरमाता है ''और जो हमारे रास्ते में हमारे लिये जान खपाते हैं उनके लिए हम अपने रास्ते खोल देते हैं''।

अल्लाह के लिए जान खपाने की दो शर्तें हैं अल्लाह के लिए जान खपाना और अल्लाह के रास्ते में जान खपाना, अगर आदमी इसकी कोशिश करता है, इसमें लगता है तो अल्लाह तआला उसको बर्बाद नहीं करते, उसके लिए रास्ते खुलते हैं, अब ज़ाहिर है कि आदमी जिस मैदान में है कोई मुदर्रिस है, कोई पढ़ने वाला है, कोई दावत के काम में लगा है, और कोई किसी दूसरे दीन के काम में लगा है, अब वो मशक्कत उठाता है, दुशवारी होती है, अगर वो दुश्वारी को बर्दाश्त करता है, और आगे बढ़ता है तो अल्लाह तबारक व तआला उसको बर्बाद नहीं करता, अल्लाह तआला इसके लिए रास्ते खोलते हैं, वो अपनी मन्ज़िल तक पहुंच सकता है, लेकिन उसके लिए कुछ न कुछ मशक्कत उठाना ज़रूरी है, इसके बग़ैर काम नहीं होता, तो इसलिए खास तौर पर हमें ये सोचने की ज़रूरत है इसका ख्याल रखें, रमज़ान में जो अल्लाह ने दिया उसको हम महफ़ूज़ रखने की कोशिश करें रमज़ान में नमाज़ों का एहतिमाम, तक्बीरे ऊला का एहतिमाम था, इसका कुछ हिस्सा पाबन्दी के साथ बाक़ी रहे, और फिर जो कैफ़ियत अल्लाह ने दी है, अगर हो सके तो कुछ न कुछ वो सिलसिला भी क़ायम रहे, अल्लाह से मांगने का निज़ाम, तवज्जो अल्लाह की तरफ़ हो तो इन्शाअल्लाह फिर अल्लाह तआला रास्ते खोलेंगे और आसानियाँ पैदा होंगी।

और जो आपको तकलीफ़ नज़र आती है ये ऐसा नहीं है कि घोड़ा हाथ से छूट गया है, अल्लाह के हाथ में सब कुछ है, और सब उसके फ़ैसलों से होता है, ये जो आप देख रहें हैं जो कुछ आपको नज़र आ रहा है, ऐसा नहीं कि खुद ब खुद हो रहा है, ये सब अल्लाह कर रहा है और करवा रहा है, क्यों करवा रहा है, इस पर हमें तवज्जो देने की ज़रूरत है, ये हमारी बदआ़मालियाँ हैं इसको लोग समझते नहीं और हज़ार बातें तलाश करते हैं, लेकिन अल्लाह तआला ने कुर्आने मजीद के अन्दर ये बात साफ़ साफ़ कह दी है कि आख़िरत के बड़े अज़ाब से पहले हम दुनिया में बड़ी मुसीबतें डालते हैं क्यों डालते हैं? ताकि लोग पलटें अल्लाह की तरफ़ लेकिन आप अन्दाज़ा कीजिए मुहल्लों में देखिये, देहातों में जाइये, हैरत इस बात पर होती है कि सब कुछ होने के बावजूद हमारी ज़िन्दगी में कोई तब्दीली नहीं आती, ये बात क़ाबिले फ़िक्र है, क़ाबिले ग़ौर है और ख़ास तौर से तवज्जो की है, अगर सब इस पर कोशिश करें अपने अपने इलाक़ों में, देहातों में, शहरों में, जो भी लोग हैं हमें उनकी फ़िक्र करनी है, तन्हा हम अपना काम कर लेंगे, काम बनेगा नहीं, आम लोगों की ज़िन्दगी देख कर अल्लाह के फ़ैसले होते हैं, तो अगर एक शख्स अच्छे अमल करता भी है तो तन्हा ये काफ़ी नहीं बल्कि ज़रूरत इस बात की होती है कि माहौल को बेहतर बनाने की फ़िक्र की जाये, इसलिए हदीस में आता है कि पिछली उम्मतों में कुछ अच्छे लोग हुए, उन्होंने किसी को देखा कोई ग़लत काम कर रहा है तो उसे रोकने की कोशिश की, उसने कभी माना कभी नहीं माना तो फ़िर उसके साथ उठना बैठना खाना पीना शुरु कर दिया, नतीजा ये हुआ कि वो भी खुद उन बुराईयों में शामिल होता गया और उसके बाद अल्लाह का अज़ाब आया, या ये कि वो बिलकुल गाफ़िल हो गये जो हो रहा है होने दिया, इसकी वजह से अल्लाह का अज़ाब आया।

अब ज़ाहिर है घुन भी पिसा, कहते हैं कि गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है, ये नहीं होता कि अज़ाब देख कर आये कि फुलां घर में अज़ाब आये और फुलां घर में अज़ाब न आये, जब बुराई फैल जाती है, बड़ी तादाद बुराइयों में मुब्तला हो जाती है तो अल्लाह की तरफ़ से पकड़ होती है और पकड़ का तरीक़ा ये होता है कि सब पकड़े जाते हैं।

इसलिए हम तन्हा अपने आपको ये सोचें कि बचा लेंगे अच्छाई करके तो ये मुश्किल है, हमें खुद भी अपने आपको बचाना है, ऐसी ही माहौल बनाने की फिक्र करनी है, जब माहौल अच्छा होगा, बड़ी हद तक लोगों के अन्दर अच्छाईयाँ पैदा होंगी, तो हालात बदलेंगे, अगर हम ऐसा नहीं करेंगे, तो हम पकड़े जायेंगे, और हम पर ये सारी चीज़ें मुसल्लत होंगी, जो मुसल्लत की जा रही हैं, ये अल्लाह का निज़ाम है, निज़ामे कुदरत जिसको कहते हैं, और ये कुर्आने करीम में एक जगह नहीं कई जगह कहा गया है कि ''खुशकी और तरी में जो बिगाड़ फ़ैल गया है, ये लोगों के हाथों की कमाई है'', लोग जो करते हैं उनकी करतूतों का ये गोया कि नतीजा है, जो हमें नज़र आ रहा है, तो कम से कम हम सब ग़ौर करें, अल्लाह ने रमज़ान की एक

नेमत हम को दी है इसका कम से कम दर्जा ये है कि हम इसकी इन कैफियात को बाकी रखने की कोशिश करें, अपने को आगे बढ़ायें, और माहौल को बेहतर बनाने की फिक्र करें, माहौल को इन्शाअल्लाह हम बेहतर बनायेंगे, इसके लिए हम दाई बन कर रहेंगे, कोशिश करेंगे, तो अल्लाह तबारक व तआ़ला की तरफ़ से भी फैसले बदलेंगे, और आज जो हालात हमें नज़र आ रहे हैं, हमारे सामने मसाएब हैं, मुश्किलात हैं, ये सब अल्लाह तआला की तरफ़ से है, हरगिज़ ये नहीं समझना चाहिए, कि ये दीन के दुशमन जो चाहते हैं करते हैं, दनदनाते फिरते हैं। ये क्या चीज़ हैं? मकड़ी के जाले की तरह हैं, एक फैसला अल्लाह का काफ़ी है, लेकिन फैसला हमको करवाना पड़ेगा, अल्लाह से मांग कर फैसले अल्लाह से करवाने पड़ेंगे, अल्लाह फैसले करेगा, और अल्लाह ने फैसले किये हैं, लेकिन हम ग़ाफिल रहें, हमारे अन्दर तब्दीली पैदा न हो, जो हो रहा है होता रहे, और हम सोचें कि जैसे बद्र वालों की मदद हुई थी ऐसी ही हमारी मदद हो तो ये नहीं होगा, अल्लाह का निज़ाम ये नहीं है, अल्लाह का निज़ाम ये है कि हम जैसी ज़िन्दगी इख्तियार करेंगे, उसी के मुताबिक़ अल्लाह तबारक व तआला के यहां फैसले होंगे, तो इसलिए इस पर भी हमें तवज्जो देने की ज़रूरत है। अफसोस की बात ये है कि हमारे अन्दर मायूसी तो पैदा होती है लेकिन कुछ करने का जज़्बा नहीं होता जबकि मायूसी कुफ़्र है कहा गया है कि ''अल्लाह की रहमत से मायूस तो वही लोग होते हैं जो अल्लाह का इन्कार करने वाले हैं'' जो अल्लाह को नहीं मानते वो मायूस हो जाते हैं, जो अल्लाह को मानते हैं उसकी कुदरत को मानते हैं, तो उनके लिए मायूसी की क्या बात है, जब अल्लाह को आदमी पकड़े तो फिर उसको कौन बहा ले जा सकता है? वह ऐसी मज़बूत रस्सी है कि आँधियाँ चलें, तूफान चलें, कुछ भी हो लेकिन वो अपनी जगह पर है, मगर ज़रूरत इस बात की है कि हम इस रस्सी को पकड़ने वाले तो हों, हमारी ज़िन्दगी उसके मुताबिक़ गुज़रे, फिर कम अज़ कम उसके लिए हम दाई हों, और एक माहौल बनाने वाले हों, जब इस मेहनत में हम लगेंगे और कोशिश करेंगे तो इन्शाअल्लाह आप खुद देखेंगे कि हालात किस तरह बदलते हैं।

कभी कभी आप देखें कि जिन इलाक़ों में ऐसी मेहनतें हुई हैं वहाँ बड़ी तब्दीली नज़र आ रही है, यहां तक हमारे बिरादराने वतन हैं जो हमसे वाक़िफ नहीं हमारे दीन से वाक़िफ़ नहीं, इस्लाम के अलिफ़ से वाक़िफ़ नहीं, ऐसी ऐसी बातें सामने आती हैं कि अक़्ल दंग रह जाये, और हम बिलकुल ग़ाफ़िल हैं, हम पहुँचाना नहीं चाहते, हमारी ज़िन्दगी ऐसी नही, कि इसको देख कर वो इस्लाम समझें, हमारी बद अख़लाक़ियाँ और हमारी इस्लाम से हट कर जो ज़ाहिरी ज़िन्दगी है, वो ऐसी है कि उसको देख कर इस्लाम से और ज़ियादा नफ़रत लोगों के अन्दर पैदा हो, इस्लाम को लोग इस तरह कैसे समझेंगे। कम से कम इसका दर्जा ये था कि खुद अपनी ज़िन्दगी को नमूने की ज़िन्दगी बनाते, अपने को नुमाइन्द–ए–रसूल

शेष पृष्ठ ....22 पर..

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

अरबों की सामान्य न्यायप्रियताः—

सिन्ध में अरबों और सिन्धी अरबों की सरकार 90 हि0 से 416 हि0 तक अर्थात 326 वर्ष तक रही। इस अवधि में खेती सिन्ध के वासियों ही के सुपुर्द रही। काश्तकारों से मालगुज़ारी वसूल करने के लिए सिन्धी ही नियुक्त किए जाते, उनकी नौकरी विरासत में चलती, आरम्भ में मालगुज़ारी सामान्यतः उतनी ही वसूल की गयी जो वह पहले करते आए थे। हिन्दुओं के रीति रिवाज में कोई हस्तक्षेप नहीं किया गया। हिन्दुओं के आपसी झगड़ों का फैसला उन्हीं की पंचायत में हुआ करता था। हिन्दुओं के पूजा स्थल युद्ध के ज़माने में तो ढाये गये या जिनमें अकूत सम्पत्ति छिपा कर रखी जाती थी, उनके विरुद्ध विजय और उनको अधीन बनाने के लिए सेना अवश्य भेजी गयी लेकिन शान्ति के समय में उनको वही स्थान दिया गया जो इस्लामी देशों में ईसायों के गिरजाघरों और पारसी धर्म के अग्निकुण्डों को दिया गया था। डॉ0 बेनी प्रसाद वर्मा लिखते हैं—

''हिन्दुस्तान में किसी सरकार के लोकप्रिय होने के लिए एक आवश्यक शर्त यह भी है कि इसके वासियों को धार्मिक कर्तव्य सम्पन्न करने और इबादत करने में आज़ादी हो। हिन्दुस्तान के मुस्लिम आक्रमणकारियों ने धार्मिक निष्पक्षता के महत्व को बहुत जल्दी महसूस कर लिया था और अपनी रणनीति इसी के अनुसार बनाया। 8वीं सदी में मुहम्मद बिन क़ासिम ने सिन्ध में अपने शासन की जो व्यवस्था स्थापित की, वह न्याय और निष्पक्षता का स्पष्ट उदाहरण है''।

युद्ध के अवसर पर इस्लाम की शिक्षाएँः—

सिन्ध में हज्जाज और मुहम्मद बिन क़ासिम की क़ौमी और व्यवस्था सम्बन्धी निष्पक्षता एक मिसाली निष्पक्षता थी। युद्ध के अवसर पर भी इस्लाम की यही उदार शिक्षाएं रहीं हैं। पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल0 जब किसी अभियान में सेना भेजते तो सेनापति को आदेश देते कि किसी बूढ़े को, बच्चे को, किसी अल्पायु को और औरत को न मारा जाए। आपका यह भी आदेश था कि युद्ध के मैदान में किसी को किसी तरह कष्ट न पहुँचने पाए।

बद्र के युद्ध में गिरफ़्तार होने वालों को आपने जब सहाबा के हवाले किया तो ज़ोर देकर यह आदेश दिया कि खाने पीने का कष्ट न होने पाए, अतः सहाबा स्वयं खजूर आदि खा कर पेट भर लेते थे और क़ैदियों को खाना खिलाते थे। हुनैन के युद्ध में 6000 क़ैदी थे। सब छोड़ दिए गए। आपने उनके पहनने के लिए कपड़े के 6000 जोड़े प्रदान किए।

हातिम ताई की बेटी जब गिरफ़्तार हो कर आयी तो अल्लाह के पैग़म्बर सल्ल0 ने बहुत सम्मान से उसको मस्जिद के एक कोने में ठहराया और कुछ दिनों के बाद यात्रा का सामान तैयार करके एक व्यक्ति के साथ यमन भिजवा दिया।

अबू दाऊद में एक अंसारी सहाबी से रिवायत है कि एक बार हम लोग एक अभियान पर गए। बहुत विपन्नता और मुसीबत का समय आया। संयोग से बकरियों का रेवड़ दिखाई दिया। सब टूट पड़े और बकरियाँ लूट लीं। अल्लाह के पैग़म्बर सल्ल0 को सूचना मिली। आप उस स्थान पर आए तो गोश्त पकाया जा रहा था, हाँडियाँ उलट दीं और सारा गोश्त मिट्टी में मिल गया, फिर फ़रमाया, लूट का माल मुर्दार गोश्त के बराबर है।

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 जब सीरिया की ओर सेना भेज रहे थे तो विदा करते समय सेनापति से फ़रमाया कि ''तुम एक ऐसी क़ौम को पाओगे जिन्होंने अपने आप को खुदा की इबादत के लिए सर्मिपत कर दिया है, उनको छोड़ देना, मैं तुमको दस वसीयतें करता हूँ, किसी औरत, बच्चे और बूढ़े की हत्या न करना, फलदार पेड़ न काटना, किसी आबाद जगह को वीरान न करना, बकरी और ऊँट के सिवा बिना वजह न ज़बह करना, खजूर के बाग न जलाना, गनीमत के माल में खुर्द–बुर्द न करना आदि आदि।

हिन्दुस्तान के मुसलमान विजेताओं की तलवारों पर एक टिप्पणीः–

यदि इन शिक्षाओं पर हिन्दुस्तान के मुसलमान विजेता पूरी तरह अमल करते तो इस्लाम की तरह उनकी विजय प्राप्त करने वाली तलवार भी शान्ति का सन्देश बन जाती। लेकिन यदि उन्होंने उन पर अमल नहीं किया तो इस पर उनको आरोप लगाया जा सकता है। इस्लाम या इस्लामी शिक्षाओं से उनकी किसी बर्बरता को जोड़ा नहीं जा सकता। उदाहरण के रूप में यदि कोई मुसलमान रहज़न या चोर हो जाए तो उसकी रहज़नी और चोरी का आरोप इस्लाम पर नहीं रखा जा सकता बल्कि यह कहना सही होगा कि इस्लाम में रहज़न और चोर घुस आए। इसी तरह मुसलमान विजेताओं ने इस्लामी शिक्षाओं के विरुद्ध जहाँ कहीं अत्याचारी और खूँखार बन कर आक्रमण किया तो उसका अर्थ यह है कि इस्लामी सेना में अत्याचारी और खूँखार सेनापति घुस आए थे। लेकिन यह कहना भी सरासर ऐतिहासिक वास्तविकता के विरुद्ध है कि वह उन शिक्षाओं की पूरी तरह अनदेखी करके युद्ध लड़ते रहे। वह मुहम्मद बिन क़ासिम का आदर्श तो प्रस्तुत न कर सके लेकिन उनकी तलवारें उनके और समकालीन विजेताओं के विपरीत विजय और दूसरों को अधीन बनाने के बाद उनके म्यान में रहीं। सरकार की व्यवस्था को स्थापित रखने में तो यह तलवारें उनके म्यान से बाहर अवश्य निकलती रहीं लेकिन इस्लाम के प्रचार–प्रसार के सिलसिले में यह इस्तेमाल नहीं हुईं। इसका बड़ा सबूत यह है कि उनकी सत्ता अधिक मज़बूत न थी, जैसे बंगाल, कश्मीर और सिन्ध जैसे दूर– दराज़ क्षेत्रों में उनकी संख्या अधिक होती चली गयी। इस वास्तविकता को न्यायप्रिय हिन्दू इतिहासकार भी स्वीकार करते हैं, जैसे के0एम0 पानिकर हिन्दुस्तान के बड़े विद्वान इतिहासकार रहे हैं, वह लिखते हैंः–

''विजय और अधीनता के ज़माने में तो हिन्दुओं को कठिनाईयों और मुसीबतों में गिरफ़्तार होना पड़ा, वह अचानक बड़े क्षेत्र से अपनी राजनीतिक सत्ता से वंचित कर दिए गए। उनके धर्म को भी तुच्छ नज़रों से देखा गया और उनके पूजा स्थल भी नष्ट किये गये। लेकिन ज्यूँ ही विजय और

सफलता का जोश समाप्त होता, देश की आर्थिक बहाली की समस्या सामने आती तो बड़े–बड़े जोशीले और भेदभाव रखने वाले सुल्तानों को भी सन्तुलित व्यवहार अपनाना पड़ा। मुसलमान आक्रमणकारी अपने साथ किसान नहीं लाए थे। दिल्ली पर सेना के माध्यम से अधिकार ही हुआ था और सेना ही ने गंगा की घाटी के राजाओं का पराजित किया था। मुसलमानों के लिए सैनिकों के माध्यम से ज़मीन पर खेती कराना संभव न था। ज़मीन सरदारों में जागीर के रूप में अवश्य बाँट दी गयीथी लेकिन काश्ताकार हिन्दू ही रहे। इसकी कभी चिन्ता नहीं की गयी कि हिन्दू ज़मींदारों और काश्तकारों को मुसलमान बना लिया जाए और न इस्लाम के प्रचार–प्रसार की कभी कोशिश की गयी। क्योंकि दोआबा में मुसलमानों का शासन 700 वर्ष रहा लेकिन अब भी हिन्दू ही की असाधारण बहुलता है। भूमि व्यवस्था में किसी तरह का परिवर्तन नहीं किया गया। इसलिए गाँव में हिन्दुओं का जीवन वैसे ही रहा जैसा पहले था''।

.....जारी.....

❖❖❖

रमज़ानुल मुबारक के बाद...

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बना कर पेश करते, तो शायद हालात कुछ और हो जाते, इसलिए ये भी फिक्र अपने अन्दर पैदा कीजिए कि हमें खुद बेहतर ज़िन्दगी इख्तियार करनी है और फिर अपने आस पास में जो भी लोग हैं उन तक सही बात पहुँचाना, उनकी फ़िक्र करना और उनको सही रास्ते पर लाने के लिए उनसे ऐसी बातें कहना कि उनके अन्दर एक ऐसा जज़्बा पैदा हो और कुछ अपने अन्दर तब्दीली लाने का ख्याल पैदा हो, तो ये अगर हमारे अन्दर फ़िक्र होगी तो इन्शा अल्लाह इससे भी हालात बदल सकते हैं, तो ये चन्द ज़रूरी चीज़ें है, अगर इन्शा अल्लाह हम इनका ख्याल रखेंगे तो इन्शाअल्लाह, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मदद भी होगी और अल्लाह तआ़ला जो कुदरत रखने वाला है, सब कुछ उसके हाथ में है, सारी दुनिया के खज़ाने उसके हाथ में हैं, वो जो चाहता है करता है, यहाँ तक कि हदीस में आता है कि ''हर शख़्स का दिल रहमान की दो उंगलियों के दर्मियान है वो जिस तरह चाहता है उसे उलटता पलटता है, जब सब अल्लाह की कुदरत में है तो मायूस होने की ज़रूरत नहीं, अल्लाह से मांगना, उसके लिए मेहनत करना, फ़िक्र करना उसके लिए माहौल बनाना और दुआयें करना ये ऐसी चीज़ है, कि इससे बहुत कुछ तब्दीली हो सकती है, बस इन्शाअल्लाह ये फिक्र पैदा हो, अपने अपने हलक़ों में अपने अपने इलाक़ों में, और जहां भी इन्सान रहता हो, मदरसों में पढ़ता हो, मदरसे में रह कर बहुत कुछ कर सकता है अल्लाह मुआफ़ करे जो ख़राबियाँ इस वक़्त पैदा हो रही हैं वो ख़राबियाँ ऐसी हैं कि हर जगह वो ख़राबियां हमें नज़र आ रही हैं, दीनी माहौल में कभी कभी ख़राबियाँ आपको नज़र आती हैं, तो अगर वो खराबियाँ हम दूर करेंगे तो अल्लाह तआला हमारी मदद करेगा और काम आसान होगा।

❖❖❖

भारतीय संविधान की कहानी मेरी ज़बानी

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

भारत का संविधान विश्व के समस्त संविधानों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। डॉ0 भीम राव अम्बेडकर के कथनानुसार ''मैं महसूस करता हूँ कि भारतीय संविधान व्यवहारिक है, इसमें परिवर्तन की क्षमता है और इसमें शान्ति काल और युद्ध काल में देश की एकता को बनाये रखने का भी सामर्थ्य है'' आइये संविधान कब, कैसे और किन परिस्थितियों में और किनके द्वारा बना उस पर थोड़ी नज़र डाल लेते हैं।

जैसा कि ज्ञात है कि सन 1600 में अंग्रेज भारत में कारोबार करने आये थे और उसी समय उन्होंने ईस्ट इंडिया कम्पनी की बुनियाद डाली। मुग़ल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु के बाद उनके वारिसों के अंदर दुर्बलता देखकर देश विरोधी ताक़तों ने सर उठाया और अंग्रेजों ने इस मौके को ग़नीमत जानकर भारत में राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने का प्रयास शुरू कर दिया।

1757 ई0 की प्लासी की जंग के बाद कम्पनी समस्त भारत की मालिक बन बैठी।इस कम्पनी ने भारत के लोगों को दास और गुलाम से बढ़ कर न जाना, अंततः लोगों के दिल में पल रही चिंगारी अंतिम मुग़ल बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र के नेतृत्व में 1857 ई0 के विद्रोह के रूप मे ज्वाला बनकर फूटी, लेकिन अनेक कारणों से ये विद्रोह असफल रहा और 1858 ई0 में ब्रिटिश संसद ने बिल पास करके कम्पनी के राजनीतिक अधिकारों का अंत कर दिया और भारत का शासन पूर्ण रूप से ब्रिटिश सम्राट के हाथों में आ गया।

भारतीय जनता अंग्रेजों के कार्य और शासन शैली से संतुष्ट न थी और ये असंतुष्टि दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही थी। अतः 1885 ई0 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की गई और उसके माध्यम से भारत की जनता द्वारा ब्रिटिश सरकार से और अधिक अधिकार मांगा गया। अंग्रेजों ने भारत के लोगों को सन्तुष्ट करने के लिये 1861ई0 1892 ई0 1909 ई0 1919 ई और 1935 ई0 में कानून पास किया मगर वे भारतीय जनमत को कभी खुश और सन्तुष्ट न कर सके।

भारतीय जनमत का मन भाँप कर ब्रिटिश शासन द्वारा 8 अगस्त 1940 ई की घोषणा में कहा गया कि विश्व युद्ध के बाद औपनिवेशिक स्वराज्य और देश अपने संविधान का निर्माण कर सकेंगे। मगर जनता उनकी नियतों को जानती थी और मन बना चुकी थी कि अंग्रेजों से छुटकारा हासिल करके ही अपने देश का संविधान बनाएंगे। अतः पूर्ण स्वतंत्रता की प्राप्ति हेतु 1942 में अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन छेड़ा गया और अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया गया।

दूसरे विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात 1945 ई में ब्रिटेन में चुनाव हुआ उसमें भारत की स्वतंत्रता की वकालत करने वाला मज़दूर दल निर्वाचित हुआ। मार्च 1946 ई में ब्रिटिश सरकार ने तीन सदस्यीय एक शिष्टमंडल जो कैबिनेट मिशन के नाम से जाना गया, उसे भारत भेजा। उसने भारत के लोगों को संविधान बनाने और अपनी निर्वाचित सरकार बनाने को लेकर सुझाव दिये। अनेक मतभेदों के बावजूद ये योजना स्वीकार कर ली गई। इसके अनुसार संविधान सभा के निर्माण हेतु अप्रत्यक्ष चुनाव हुए और दिसम्बर 1946 में नई संविधान सभा ने अपना कार्य आरंभ कर दिया।

इधर 2 सितंबर 1946 को

जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में अन्तरिम सरकार का गठन हुआ।इसी प्रकार 20 फरवरी 1947 ई को ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लार्ड एटली ने घोषणा की कि ब्रिटिश सरकार जून 1948 ई से पहले ही भारत को स्वत्रंत कर देगा।इस काम को मंज़िल तक पहुंचाने के लिये लार्ड माउंटबेटन को भारत का गवर्नर जनरल बना कर भेजा गया। माउंटबेटन ने भारत के विभिन्न राजनीतिक दलों से विचार विमर्श करने के बाद 3 जून 1947 को अपनी योजना पेश की। इसमें भारत की आज़ादी के साथ–साथ एक अलग राष्ट्र पाकिस्तान के निर्माण की बात कही गई। सभी पक्षों द्वारा इस योजना को स्वीकारने के बाद अंतत 15 अगस्त 1947 को भारत एक आज़ाद मुल्क घोषित कर दिया गया।

स्वतंत्रता के पूर्व जो कैबिनेट मिशन द्वारा संविधान सभा बनाई गई थी,उसमें 389 सदस्य थे मगर जब पाकिस्तान बन गया तो 310 सदस्य रह गए,ये सदस्य अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित हो कर संविधान सभा का हिस्सा बने थे।इसमें जो नरेश अपनी रियासत को भारतीय संघ में विलय करने को तैयार हो गए थे उनके नामजद प्रतिनिधियों ने भी संविधान सभा में भाग लिया। ये संविधान सभा समस्त भारतीयों का प्रतिनिधित्व करती थी और इसमें प्रायः स्वतंत्रता आंदोलन और कांग्रेस के चोटी के नेता शामिल थे, इसमें जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, सरदार बल्लभ भाई पटेल, डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, गोविंद बल्लभ पंत, आचार्य कृपलानी, पुरुषोत्तम दास टण्डन, मौलाना हसरत मोहानी, मौलाना हिफजुर्रहमान सेवहारवी, आसिफ अली, जसीमुद्दीन अहमद, के0टी0एम0 अहमद इब्राहीम, क़ाजी सय्यद करीमुद्दीन, मो0 इस्माईल साहब, महबूब अली बेग साहब बहादुर, शैख मु0 अब्दुल्लाह, मौलाना मु0 सईद मस्ऊदी, नजीरुद्दीन अहमद, रफी अहमद क़िदवाई, सैय्यद जाफर इमाम, तजम्मुल हुसैन, शेख ग़ालिब साहब, आफताब अहमद खान, अब्दुल क़ादिर मु0 शेख आदि व अन्य दलों के डॉक्टर सर्वपल्ली राधा कृष्णन, डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पी.के.टी. शाह और डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर आदि थे। महिला सदस्यों में सरोजनी नायडू, हंस मेहता और दुर्गा भाई देशमुख प्रमुख थीं तथा एक मात्र मुस्लिम महिला सदस्य बेग़म एजाज रसूल थीं।

ये बात विचारणीय है कि संविधान सभा अपने जन्म के समय से प्रभुत्व संपन्न और स्वतंत्र नहीं थी बल्कि कैबिनेट मिशन योजना में वर्णित संविधान के अधीन थी मगर भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 ई के कारण संविधान सभा आज़ाद और सम्पूर्ण प्रभुत्व संपन्न सभा बन गई।

संविधान निर्माण हेतु प्रथम बैठक 9 सितंबर 1946 ई को डॉक्टर सच्चिदानंद सिन्हा की अध्यक्षता में हुई, कुछ महीने के उपरांत 11 दिसम्बर 1946 ई को डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद संविधान सभा के स्थायी सभापति बनाये गए और संविधान बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई। सबसे पहले 13 दिसम्बर 1946 को जवाहर लाल नेहरु ने संविधान में "उद्देश्य प्रस्ताव" पेश किया जो 22 जनवरी 1947 ई को स्वीकृति हुआ।

संविधान सभा ने संविधान का प्रारूप तैयार करने हेतु 29 अगस्त 1947 ई को डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की अध्यक्षता में 7 सदस्यों की एक प्रारूप समिति का गठन किया जिसमें एन0 गोपालस्वामी आयंगर, अल्लादि कृष्णा स्वामी अय्यर, मुहम्मद सादुल्लाह, के0 एम0 मुन्शी, ब0एल0 मित्तल और डी0 पी0 खेतान शामिल थे। कुछ समय पश्चात बी0एल0 मित्तल का स्थान एन0 माधव राज ने ले लिया और 1948 में डी0पी0 खेतान की मृत्य के उपरांत

टी0टी0 कृष्णामाचारी ने उनका स्थान ग्रहण किया।

संविधान प्रारूप समिति ने 315 धाराओं व 8 परिशिष्टों का मुसव्विदा तैयार करके 5 नवम्बर 1948 ई को संविधान सभा के समक्ष रखा। इस प्रारूप में 7535 संशोधन पेश किये गए मगर बाद में केवल 2437 संशोधनों पर विचार किया गया और अंतिम रूप से 26 नवम्बर 1949 ई0 को 395 धाराओं तथा 9 परिशिष्टों को संविधान सभा द्वारा स्वीकार किया गया।

ज्ञात रहे कि संविधान के कुछ अनुच्छेद इसी दिन ही लागू कर दिए गए पर शेष संविधान 26 जनवरी के दिन उसके स्वतंत्रता आंदोलन में ऐतिहासिक महत्व के कारण 26 जनवरी 1950 में लागू किया गया।

जैसा कि पूर्व में लिखा गया कि संविधान की प्रस्तावना में व्यक्त किये गए भाव सर्वप्रथम जवाहरलाल नेहरू द्वारा संविधान सभा के प्रथम अधिवेशन में 13 दिसम्बर 1946 ई के "उद्देश्य प्रस्ताव" में अपनाए गए थे। नेहरू जी का यह उद्देश्य प्रस्ताव महात्मा गांधी के विचारों और भावनाओं पर आधारित था।

संविधान की प्रस्तावना ऐसी प्रस्तावना है जो कि हर भारतीय के दिल और ज़बान पर संजोए जाने योग्य है। मूल प्रस्तावना इस प्रकार है:

''हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व संपन्न लोकतन्त्रनात्मक गणराज्य बनाने के लिये तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर को प्राप्त कराने के लिये तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाने के लिये दृढ़ संकल्प हो कर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख़ 26 नवम्बर 1949 ई0 को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं'।

1976 ई में इंदिरा गांधी की सरकार में 42 वें संवैधानिक संशोधन (1976) के द्वारा प्रस्तावना में तीन शब्दों और भावों 'समाजवादी, पंथनिरपेक्ष और अखंडता' को जोड़ा गया और राष्ट्र की सोच व विचारधारा को स्पष्ट दिशा दी गई।

1931 ई0 में महात्मा गांधी जब दूसरे गोल मेज सम्मेलन में शामिल होने के लिये जा रहे थे तब एक पत्रकार ने उनसे पूछा था कि 'आप भारत के लिये किस प्रकार का संविधान ले कर जाना पसंद करेंगे' तो इसके जवाब में गांधी जी ने कहा था:–

'मैं भारत के लिये ऐसा संविधान लाने का प्रयास करूंगा जो भारत को दासता और संरक्षण के बंधनों से मुक्त कर दे,जो उसे सब अधिकार दे, आवश्कयता पड़ने पर पाप–कर्म करने तक का अधिकार दे।मैं ऐसे भारत का निर्माण करना चाहता हूँ जिसमें निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी यह अनुभव करे कि भारत उसका अपना देश है और इसके निर्माण में उसका मत भी महत्व रखता है।मैं ऐसा भारत चाहता हूँ जहां ऊंच और नीच का कोई भेद न हो, जहां सभी सम्प्रदाय मिल–जुल कर रहें'। ज़रूरी मालूम होता है कि संविधान की प्रस्तावना में जो आदर्श अपनाए गए हैं उसकी संक्षेप में कुछ चर्चा कर ली जाय।

सबसे पहले न्याय पर चर्चा करते हैं कि प्रस्तावना के अंतर्गत सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय को संविधान का लक्ष्य क़रार दिया गया है ताकि देश का हर नागरिक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय प्राप्त कर सके।

सामाजिक न्याय से तात्पर्य ये है कि समाज में व्यक्ति को व्यक्ति के नाते महत्व दिया जाना चाहिए और जाति, धर्म, वर्ण, लिंग, नस्ल और माल व दौलत और उपाधि आदि किसी आधार पर भेदभाव नहीं किया जाना

चाहिये। इसी सामाजिक न्याय के अंतर्गत अस्पृश्यता और भेदभाव जैसी मानसिक बीमारी के लिये भी समाज में कोई स्थान नहीं होना चाहिये।

विचारणीय है कि सामाजिक न्याय का तात्पर्य देश के सभी नागरिकों को स्वतंत्रता के साथ समानता प्रदान करना है।

अब बात आर्थिक न्याय की कि वह सामाजिक न्याय का पूरक है और इसका तात्पर्य ये है कि समाज में विधमान ऐसी व्यवस्था का अंत कर दिया जाना चाहिए जिसमें कुछ साधन सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा बहुसंख्यक साधनहीन व्यक्तियों का शोषण किया जाता हो। आर्थिक न्याय के इस लक्ष्य की प्राप्ति तभी सम्भव है जबकि उत्पादन और वितरण के साधनों पर समस्त समाज का अधिकार हो और उनका प्रयोग समस्त समाज के हितों को ध्यान में रख कर किया जाय, जैसे योग्यता के अनुसार रोज़गार और रोज़गार के बदले पर्याप्त वेतन और गंभीर आर्थिक विषमताओं और भेदभाव का अंत है।

राजनीतिक न्याय का तात्पर्य यह है कि समाज के सभी व्यक्तियों को राजनीतिक क्षेत्र में स्वतंत्र और समान रूप से भाग लेने का अवसर प्राप्त होना चाहिये और धर्म, जाति, वर्ण, लिंग, क्षेत्रवाद और भाषा के आधार पर किसी को राजनीतिक क्षेत्र में प्रतिभाग से न रोका जाना ही राजनीतिक न्याय है।

अब दूसरे तत्व समानता की बात करते हैं कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय के संदर्भ में "समानता" का जो उल्लेख है उसमें यह भाव निहित है कि समाज के कमज़ोर और पिछड़े वर्गों के लिये अन्य व्यक्तियों के समान ही नहीं बल्कि उनके लिये विशेष सुविधा की व्यवस्था की जानी चाहिये क्योंकि जब तक उन्हें विशेष सुविधा नहीं दी जा सकेगी तब तक वह समाज के अन्य व्यक्तियों के समान अपने व्यक्तिव के विकास और साथ में सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक न्याय को प्राप्त नहीं कर सकेंगे, इसलिए भारतीय संविधान में कुछ वर्गों के लिये आरक्षण का प्रावधान है ताकि वह समानता की श्रेणी में आ सकें।

ज्ञात रहे कि समानता स्वतंत्रता की पूरक है और संविधान निर्माताओं द्वारा समानता के इन दो आयामों "प्रतिष्ठा की समानता" और "अवसर की समानता" में अपनाया गया है। अवसर की समानता वह माध्यम और साधन है जिसके आधार पर प्रतिष्ठा की समानता को प्राप्त किया जा सकता है।

स्वतंत्रता के परिपेक्ष्य में ये बात विचारणीय है कि भारतीय संविधान में नकारात्मक स्वतंत्रता नहीं बल्कि सकारात्मक स्वतंत्रता को स्थान दिया है जिससे देश के नागरिकों के व्यक्तित्व का विकास हो सके, इसी आधार पर विचार अभिव्यक्ति ,विश्वास,धर्म और उपासना की स्वतंत्रता को संविधान में जगह दी गई है।

संविधान की प्रस्तावना में उल्लेखित अंतिम आदर्श बन्धुता है, ऐसा माना जाता है कि संविधान में बन्धुता की प्रेरणा 10 दिसम्बर 1948 ई0 को मानवीय अधिकारों के सार्वलौकिक घोषणा पत्र (universal declaration of human rights) के प्रथम अनुच्छेद से ली गई है, जिसमें कहा गया है कि 'सभी मानव स्वतन्त्र पैदा हुए हैं और सम्मान तथा अधिकारों में समान हैं,उन्हें प्रकृति से विवेक तथा विश्वास प्राप्त हुआ है तथा उनके द्वारा एक दूसरे के प्रति भाईचारे की भावना के आधार पर आचरण किया जाना चाहिए'।

संविधान निर्माता देश की विविधता में विधमान एकता से बखूबी परिचित थे और वह चाहते थे कि भारत के नागरिक क्षेत्रीयता, प्रान्तवाद, भाषावाद और सम्प्रदायवाद को महत्व न देते हुए भारत की आधारभूत एकता के भाव को अपनाएं.....

❖❖❖

आज़ादी का अमृत महोत्सव

✍जमाल अहमद नदवी
(उप सम्पादक)

हमारे देश भारत में हर साल आज़ादी का जश्न बड़े जोश ख़रोश के साथ मनाया जाता है, और देश की आज़ादी के लिए अपने तन मन धन की बाज़ी लगाने वाले वीर सपूतों और बलिदानियों को याद किया जाता है, इस साल 15 अगस्त 2022 को आज़ादी के 75 साल पूरे हो रहे थे इसलिए भारत सरकार ने इस बार के आज़ादी के जश्न को अमृत महोत्सव के रूप में मनाने का एलान एक साल पहले कर दिया था। इसके साथ हर घर तिरंगा अभियान को जोड़ कर इस अमृत महोत्सव को और भव्य बनाने की कार्ययोजना बनाई और हर स्तर पर उसे कामयाब बनाने के लिए अपनी पूरी ताक़त झोंक दी, हफ़्तों पहले से अभियान चलाया गया जगह जगह साइकल, मोटर साइकल, पैदल मार्च निकाल कर राष्ट्र के प्रति प्रेमभाव पैदा करने की कोशिश की गयी, जिसके परिणाम स्वरूप क्या शहर, क्या देहात क्या गली क्या मोहल्ले हर जगह लोग आज़ादी के जश्न में डूबे नज़र आये।

लेकिन सोचने की बात यह है कि क्या इससे मंहगाई से तरस्त जनता को मंहगाई से नजात मिल जायेगी, क्या बेरोज़गारी का मुद्दा खत्म हो जायेगा, क्या शिक्षा के क्षेत्र की अनिमित्तायें समाप्त हो जायेंगी, क्या अभिव्यक्ति की आज़ादी के नाम पर नफ़रत का ज़हर घोलने वालों पर लगाम लग सकेगी, क्या आज़ादी के इतिहास को तोड़ मरोड़ कर पेश करने से आज़ादी की हक़ीक़त बदल जायेगी, क्या बदहाल स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार आ जायेगा, क्या मंहगाई की मार झेल रहे लोगों को खाने पीने की चीज़ों पर लगी जी0एस0टी0 में छूट मिल पायेगी, क्या गुजरात सरकार का बिलकीस बानो के सामूहिक बलात्कार के जघन्य मुजरिमों को छोड़ना न्याय संगत है क्या एक दलित बच्चे को पानी पीने के जुर्म में एक सवर्ण समुदाय का टीचर पीट–पीट कर मार डालेगा, क्या देश की खुशहाली इन्हीं रास्तों से परवान चढ़ेगी।

आज ज़रूरत इस बात की है कि सरकारें अपने कर्तव्यों को समझें और तिरंगा अभियान की तरह ही मंहगाई, बेरोजगारी, अशिक्षा, अन्याय स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली, असुरक्षा और सामाजिक विदूषियों के खिलाफ ज़ोरदार अभियान चला कर आम जनमानस की भावनाओं का सम्मान करें, ताकि देश का हर नागरिक अपने को सम्मानित और सुरक्षित महसूस करे।

इसी प्रकार से देश के हर नागरिक का आमतौर से और हर मुसलमान का खास तौर से कर्तव्य है कि वह सिर्फ सरकारों पर निर्भर हो कर हाथ पे हाथ धरे न बैठे रहें बल्कि समाज सुधार से ले कर हर क्षेत्र में आत्म निर्भर बनने की पूरी कोशिश करें और समाज का हर व्यक्ति अपने शहर अपने गली मोहल्ले तक में आपसी प्यार व महब्बत को बढ़ावा देने का आखरी प्रयास करे ताकि आज़ादी का यह अमृत महोत्सव सही मानों में अमृत बन सके।

❖❖❖

दीन व मिल्लत के एक नि:स्वार्थ और संयमी ख़ादिम
मौलाना सय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी रह०

मुहम्मद इस्हाक़ नदवी

मुहर्रमुल हराम सन् 1423 हिजरी की कोई तारीख थी, दफ़्तर निज़ामत नदवतुल उलमा में मौलाना सय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी रह0 से पहली मुलाक़ात का सम्मान प्राप्त हुआ, मैंने नदवा में नौकरी की दरख़्वास्त पेश की थी जिसमें लिखा था कि प्रार्थी दीन की खिदमत करना चाहता है, इसलिए नदवा में नौकरी करना चाहता है, मौलाना सय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी साहब से सिफ़ारिश करवाई थी, हज़रत नाज़िम साहब ने जनाब नाज़िरे आम मौलाना सै0 हमज़ा हसनी नदवी साहब के पास जाने का हुक्म फ़रमाया, मैं नाज़िरे आम साहब के दफ़्तर पहुँचा और दरख़्वास्त पेश की, दरख़्वास्त देखने के बाद फ़रमाया कि वाकई दीन की ख़िदमत करना चाहते हो? मैंने कहा जी हाँ! उन्होंने फ़रमाया कि दीन की खिदमत तो कहीं भी हो सकती है, फिर ''नदवा'' का इन्तिख़ाब क्यों किया? मैंने कहा बस यह ख़ुवाहिश है कि आप हज़रात की निगरानी में दीन की ख़िदमत अन्जाम दूँ, फरमाया तो फिर जा कर मौलाना सय्यद बिलाल हसनी नदवी से मिल लो, और उनकी हिदायत और निगरानी में काम करो, और नियुक्ति की एक कापी दी जिसमें प्यारेपुर रायबरेली रोड में बतौर मुबल्लिग़ काम करने और मकतब क़ायम करने की हिदायत थी।

मैं आदेशानुसार मौलाना सय्यद बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मौलाना की तहरीर दिखाई, तो मौलाना ने मुझे प्यारेपुर भिजवा दिया वहां जा कर मालूम हुआ कि यह तो पूरा का पूरा गाँव रज़ा ख़ानी है, केवल एक वकील साहब थे जो शहर राय बरेली में प्रेक्टिस करते थे, जिन की वजह से वह हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 और तकिया व मैदानपुर के हालात से परिचित थे, इसी बुन्याद पर किसी मौक़े पर मोलवी शराफ़त हुसैन साहब से उन्होंने अपने गाँव प्यारेपुर में मदरसा क़ायम करने की बात कही थी लेकिन जब मैं वहाँ पहुँचा, उनसे मुलाक़ात की, अपने आने का मक़सद बताया तो वह फ़ौरन अपनी बात से मुकर गये और कहने लगे कि पुरानी बात थी, अब अगर यहाँ काम करना ही है तो मेरी इस ज़मीन पर पहले मदरसे की इमारत बनवाइये फिर काम शुरु कीजिये, वरना यहाँ के लोग तुम्हें एक दिन भी नहीं रुकने देंगे, जाइये और जा कर अपने मौलाना से यह बात बता दीजिये, प्यारेपुर से मैं वापस आ गया, मौलाना से मुलाक़ात की और पूरी रूदाद सुना दी, मौलाना ने तसल्ली दी और फ़रमाया मदरसा ज़ियाउल उलूम में क़ियाम करो और शहर रायबरेली के अतराफ़ का ख़ास कर महराजगंज के इलाक़े के और लखनऊ रोड के देहात का दौरा करके सर्वे करो, आदेशानुसार मैंने अपना काम शुरु कर दिया लगभग छः या सात माह तक यह सिलसिला चलता रहा, ईद की छुट्टी के बाद मैं जब रायबरेली पहुँचा तो मौलाना सय्यद बिलाल हसनी नदवी ने फ़रमाया नदवा जाओ,

मौलाना सय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी ने तलब फ़रमाया है मैं लखनऊ वापस आया मौलाना से मुलाक़ात की, मौलाना ने फ़रमाया कि रायबरेली रोड पर निगोहाँ से आगे मौज़ा कनकहा में क़ादयानी आ गया है, मालूम करो कि वहाँ कोई सहीहुल–अक़ीदा इमाम है या नहीं? दूसरे दिन मैं कनकहा गया, ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त था लेकिन एक शख़्स भी मस्जिद न आया, काफ़ी इन्तिज़ार के बाद ख़ुद ही अज़ान कही और तनहा नमाज़ पढ़ी, जब मस्जिद से निकला तो एक साहब से मुलाकात हुई गाँव के हालात मालूम किये, क़ादयानी के बारे में मालूम किया, उसने बताया कि वह इसी गाँव का रहने वाला है, यहीं इमामत करता था, क़ादयानियों ने पैसे का लालच दिया तो उसने इमामत छोड़ दी और क़ादयानियों से मिल गया है, अन्दाज़ा हुआ कि गाँव में दीनी माहौल की कमी है। मैं वापस नदवा आया और नाज़िरे आम साहब को रिपोर्ट दी, मौलाना ने फ़रमाया अब शोब–ए–दावत व इरशाद के दफ़्तर में बैठो, और यहीं से लखनऊ रायबरेली रोड के अतराफ़ के देहातों का दौरा करो, मैंने आदेशानुसार काम करना शुरु कर दिया अलहमदुलिल्लाह कई जगह मस्जिदें भी तामीर हुईं और कई जगह मकतब भी क़ाएम हुए। आइम्मा व मुदर्रसीन का इन्तिज़ाम किया गया। मौलाना मरहूम नाचीज़ पर ख़ास शफ़क़त व इनायत फरमाते, काफ़ी एतिमाद फरमाते, किसी ग़लती पर कोई सज़ा नहीं दी, न डाँट–डपट की, बेटे की तरह समझाते, दफ़्तरी कामों का तरीक़ा सिखाते, यहां तक कि नाचीज़ को अपनी ख़िदमत के लायक़ समझा और दफ़्तर निज़ामत में बैठने का हुक्म दिया, कुछ अर्से की ख़िदमत के बाद हज़रत नाज़िम साहब का प्राइवेट सिक्रेटरी मुक़र्रर फ़रमाया और ताकीद फ़रमाई कि तमाम दफ़्तरी काग़ज़ात तुम्हारे ज़रिये ही हज़रत नाज़िम साहब के पास मन्ज़ूरी के लिए जाने चाहिये।

मौलाना हमज़ा हसनी मरहूम को मुसलमानों में दीनी बेदारी की बड़ी फ़िक्र थी, इसी लिए शोब–ए–दअ़वत व इरशाद के कामों को बहुत ज़ियादा फैलाया, हर जुमे को लखनऊ के आस पास के देहातों में ऊँचे दर्जे के तलबा जाते, इसके लिए मौलाना मरहूम ने एक गाड़ी ख़ास कर दी थी, इन कामों की निगरानी और सरबराही हाफ़िज़ डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0 फ़रमाते थे इसके अवाला मौलाना मरहूम ने हिन्दी उर्दू में बहुत से दावती पम्फलेट्स तैयार करवाये और तक़सीम करवाये,।

शोब–ए–दावतो इरशाद की तरफ़ से तक़रीबन हर साल दो, तीन दिन का तरबियती प्रोग्राम नदवे में किया जाता जिसमें नदवे से सम्बन्धित मदरसों से एक एक उस्ताज़ को दावत दी जाती, इस प्रोग्राम में हज़रत नाज़िम साहब मुहतमिम साहब और नदवे के सीनियर असातिज़ा का खिताब होता, जिससे बहुत ज़ियादा फ़ाइदा होता। अलहमदुलिल्लाह हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी साहब नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती और जनाब नाज़िरे आम व नायब नाज़िम मौलाना सय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी रहमतुल्लाह अलैहि की मेहनतों से तालीमी व तरबियती इन्तिज़ामी व तामीरी मैदान में नदवतुल उलमा ने ख़ूब तरक़्क़ी की, और बराबर तरक़्क़ी के रास्ते पर रवाँ–दवाँ है।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: ऐसे रेलवे, बस, ट्रक और दूसरी सवारियों के चालक परिचालक या दूसरे कर्मचारी जो प्रतिदिन सौ किलोमीटर या उससे ज़ियादा का सफ़र करते हैं और उनकी नीयत सफर की नहीं बल्कि ड्यूटी अंजाम देने की होती है, उनको पूरी नमाज़ पढ़ना होगी या क़स्र नमाज़ पढ़ने की इजाज़त होगी?

उत्तर: कर्मचारी हों या सामान्य लोग जिनको प्रतिदिन 78 किलोमीटर से ज़ियादा सफर करना पड़ता हो, चाहे उनका मक़सद ड्यूटी करना हो या कुछ और वह मुसाफिर होंगे और वह क़स्र नमाज़ पढ़ेंगे, क्योंकि क़स्र का हुक्म सफर पर है न कि सफर के मक़सद पर, इसलिए 78 किलोमीटर से ज़ियादा सफर की सूरत में क़स्र नमाज़ पढ़ेगा इससे कम हो तो यह आदेश लागू न होगा।

(रद्दुल मुहतार 600/2)

प्रश्न: एक व्यक्ति ट्रेन या बस या अन्य किसी सवारी से सफर करने की नीयत से घर से निकला, लेकिन अभी वह रेलवे स्टेशन या बस अड्डे पर पहुँचा कि नमाज़ का समय आ गया, स्टेशन शहर, कस्बे, आबादी से मिला हुआ है ऐसी सूरत में वह व्यक्ति अभी कस्र नमाज़ पढ़ेगा या पूरी नमाज़ पढ़ेगा?

उत्तर: सफर की नीयत से जब अपने शहर, क़स्बे, आबादी से बाहर हो जाये और 78 किलो मीटर से ज़ियादा का सफर हो तब क़स्र नमाज़ पढ़ने की इज़ाज़त होगी, शहर के अन्दर स्टेशन पर कस्र नमाज़ की इजाज़त न होगी।

(रद्दुल मुहतार 599—604/2)

प्रश्न: लाईट और पानी का बगैर मीटर के प्रयोग करना या मीटर रोकने के लिए तरकीब करना कैसा है?

उत्तर: मीटर के बगैर लाईट और पानी हासिल करना या मीटर को रोक देना चोरी करने में दाखिल है और चोरी इस्लाम कें सख्त गुनाह है।

(सही बुखारी— 6782)

प्रश्न: औरतों के लिए पैरों में मेंहदी लगाना कैसा है, औरतें श्रृंगार के तौर पर उसका प्रयोग करती हैं, क्या यह अच्छा है?

उत्तर: औरतों को श्रृंगार के तौर पर पैरों में मेंहदी लगाने की इजाज़त है, अगर दवा इलाज की ज़रूरत हो तो मर्दों के लिए भी इसकी इजाज़त है।

(फतावा हिन्दीया 359/5)

प्रश्न: फर्ज नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ने की बड़ी ताकीद आई है, उसके लिए सफबंदी भी ज़रूरी क़रार दी गयी है, कभी कभी आगे की सफ में जगह खाली रह जाती है मगर वहां तक पहुंचने के लिए पिछली सफ के नमाज़ी के सामने से गुज़रना पड़ता है, ऐसी सूरत में क्या करना चाहिए, सफ की खाली जगह जा कर भरे, या नमाज़ी के सामने से गुज़रने से परहेज करे? सफ भरने के लिए आगे से गुज़रने में गुनाह तो नहीं होगा?

उत्तर: अगर आगे की सफ में जगह खाली हो तो सफ़ों के बीच से निकलते हुए आगे की जगह भर लेनी चाहिए, सफ भरने के लिए नमाज़ी के आगे से

अगर गुज़रना पड़े तो यह उज्र और मजबूरी है इसकी वजह से गुनाह नहीं होगा।

(मुंयतुल मुसल्लीः 244)

प्रश्नः बच्चे सफ में कहां खड़े हों? देखा यह जाता है कि बड़े हजरात बच्चों को आगे नमाज़ नहीं पढ़ने देते हैं और भगा देते हैं, और यह बच्चे पिछली सफ में खड़े हो कर काफी शोर शराबा मचाते हैं, इस बारे में शरीअ़त का क्या हुक्म है?

उत्तरः सही मानों में बच्चों की सफ बड़ों से पीछे होनी चाहिए, हज़रत अबू मालिक अशअ़री रह0 के बारे में मरवी है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल0 के नमाज़ पढ़ने के तरीक़े पर लोगों को नमाज़ पढ़ कर बताया, चुनांचे पहले मर्दों की सफें लगाईं, फिर उनके पीछे बच्चों की, उसके बाद नमाज़ पढ़ाई।

(अबू दाऊद हदीस नं0 677)

लेकिन यह हुक्म उस समय है जब कि बच्चे शोर व हंगामा न करते हों, अगर बच्चे छोटे हों और शोर व हंगामा करते हों तो उन्हें बड़ों की सफ में खड़ा कर लेना चाहिए ताकि बड़ों की नमाज़ में खलल न पड़े।

(तकरीरात अश्शामी 73/2)

बच्चों को डाँट डपट कर सफों से भगाना प्रशिक्षण की दृष्टिकोण से सही नहीं है, हाँ अगर बच्चे बहुत ही ना समझ और छोटे हों तो उनको मस्जिद में नहीं लाना चाहिए कि कहीं वह पेशाब वगैरह न कर दें, ऐसे ही बच्चों के बारे में रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया कि इन से मस्जिद को बचाया जाय।

(मुसन्नफे अब्दुर्रज़्ज़ाक़ हदीस नं0 1728)

प्रश्नः क्या वह व्यक्ति जिसे सफर की तमाम सहूलतें हासिल हों, वह आठ हजार कि0मी0 पैदल सफर कर के हज को जा सकता है? क्या उसका ऐसा करना सही है? शरीअत का ऐसे व्यक्ति के बारे में क्या हुक्म है?

उत्तरः हर वह आक़िल बालिग मुसलमान जो माली और जिस्मानी तौर पर हज के सफर का सामर्थ्य रखता हो, ज़िन्दगी में एक बार उस पर हज फर्ज है, सामर्थ्य में सवारी, रास्ते का महफूज होना, आने जाने, खाने पीने, ठहरने के समस्त खर्चे उसमें शामिल हैं ऐसे मुकम्मल सामर्थ्य रखने वाले व्यक्ति के लिए बेहतर तो यही है कि जिस प्रकार दूसरे लोग हज पर जाते हैं उसी प्रकार यह भी जाये, लेकिन कहीं मना भी नहीं है कि ऐसा व्यक्ति पैदल नहीं जा सकता, पैदल जाने से भी हज अदा हो जायेगा, बल्कि अगर कोई अल्लाह व रसूल सल्ल0 का ऐसा सच्चा आशिक़ है कि वह अल्लाह व रसूल सल्ल0 के दर की ज़ियारत के लिए पैदल जाना अपनी सआदत व खुशनसीबी समझता है और इस जज़्बे से पैदल सफर करता है तो उसका यह जज़्बा क़ाबिले क़द्र है, हाँ अगर कोई पैसा बचाने अथवा शोहरत के लिए ऐसा करता है तो यह नीयत ठीक नहीं है और ऐसा करना गुनाह का जरीया होगा, बाक़ी किसी को किसी की नीयत तै करने का कोई अधिकार नहीं।

❖❖❖

कुर्आन की तिलावत के फायदे

- कुर्आन मजीद की तिलावत से अल्लाह तआला की महब्बत में बढ़ोत्री होती है।
- हर हर्फ पर दस नेकियाँ मिलती हैं।
- दिल का ज़ंग साफ़ होता है।
- क़यामत के दिन गवाह साबित होगा।

शिक्षा.एक बुन्यादी ज़रूरत

इं0 जावेद इक़बाल

शिक्षा हर इंसान की बुनियादी ज़रूरत है, इसकी अहमियत का अन्दाज़ा सिर्फ इस बात से लगाया जा सकता है कि पहली ''वह्य'' जो अल्लाह तआला ने अपने आखिरी रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर उतारी पढ़ने का हुक्म पहले शब्द में ही दिया गया था। लिहाजा हर मुसलमान के लिए पुरुष हो या स्त्री, ग़रीब हो या अमीर, बच्चा हो या बूढा शिक्षा प्राप्त करने की कोशिश उसे ज़रूर करना चाहिए। शिक्षा से इंसान की बुद्धि का विकास होता है, उसके सोचने समझने और गौर व फिक्र करने की सलाहियत बढ़ती है, आत्मविश्वास की वृद्धि होती है, और समाज में सम्मान प्राप्त होता है।

जिस समाज में शिक्षित व्यक्तियों का प्रतिशत अधिक होता है उस समाज को शासन प्रशासन में अधिक अधिकार प्राप्त होते हैं। शिक्षा केवल पुस्तकें पढ़ लेने और डिग्रियां हासिल कर लेने का नाम नहीं है। शिक्षा के साथ साथ प्रशिक्षण यानि तरबियत बहुत जरूरी है। बच्चे को सर्वप्रथम अपने घर के सदस्यों के द्वारा विशेष कर माता पिता के द्वारा जो तरबियत हासिल होती है वह किसी भव्य भवन की मजबूत बुनियाद के समान होती है। मज़बूत बुनियाद पर बनने वाला भवन टिकाऊ, सुन्दर, और लम्बे समय तक उपयोगी रहता है।

कुरआन पाक में शिक्षा के महत्व को अनेक स्थानों पर भिन्न–भिन्न अदांज में बयान किया गया है। ज़मीन व आसमान की हर चीज़ का अध्ययन करने की प्रेरणा दी गई है। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को नौका बनाने का आदेश, हज़रत दाऊद के द्वारा जंगी कवच बनाने की कला, जुलकरनैन को आहनी दीवार बनाने का हुनर, यह सब क्या है? क्या यह सब कारीगरी बिना ज्ञान और शिक्षा या प्रशिक्षण के संभव है?

निःसंदेह नबियों ने भी उस समय के अनुसार सम्बंधित तकनीक का ज्ञान प्राप्त किया होगा, चाहे वह अल्लाह तआला की तरफ से उनके दिल दिमाग़ में डाला गया लदुन्नी ज्ञान रहा हो चाहे समाज के अन्य जानकार लोगों से सीखा हो उसी को दूसरे लोग आइडिया भी कहते हैं।

सूरः मुहम्मद आयत 24 में सवालिया अंदाज़ में फरमाया गया है *''भला ये लोग कुर्आन में बयान की हुई हक़ीक़तों पर ग़ौर नहीं करते''* दौरे अव्वल के मुसलमानों ने कुर्आन की झंजोड़ देने वाली इन बातों को गम्भीरता पूर्वक समझा नई नई तहक़ीक़ात में लग गए, उन्होंने अपनी अंथक कोशिशों से कुदरत के वह राज़ खोले, वह उसूल व जाबते दुनिया को बताये कि जिनके आधार पर आगे चल कर वह आविष्कार जुहूर में आये जिनसे आज हम लाभान्वित हो रहे हैं।

मुहम्मद बिन मूसा ख़वारज़मी, इब्नेसीना, उमर खय्याम, अबू रैहान अलबैरूनी इब्ने ख़लदून, याकूब बिन तारिक़ जैसे सैकड़ों नाम हैं जिन्होंने दुनिया को आज की तरक्की के मुकाम तक पहुंचने की राह हमवार की थी। Mathematics, physics, chemistry, astrology, geology, medical science, philosophy सारांश यह कि ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में दौरे अव्वल के मुसलमानों ने प्रकृति के वह रहस्य खोले जिनको देख कर दुनिया चकित रह गई।

मगर धीरे–धीरे मुसलमानों में यह भावना जड़ पकड़ने लगी कि हकीकी इल्म तो केवल वह है जो हमें आख़रित की ज़िन्दगी में कामयाबी दिला सके, बाक़ी सब तो दुनिया की लज़्ज़तों को हासिल करने का ज़रिया है। और दुनिया की हक़ीक़त अल्लाह की नज़र में मक्खी के पर के बराबर भी नहीं। नतीजा यह हुआ कि क़ुरआन की हामिल क़ौम धीरे

धीरे केवल कुरआन के अल्फाज़ तक सीमित हो कर रह गई, अल्फाज की गहराई तक उतरना उसने छोड़ दिया और इल्मी दुनिया से मुँह मोड़ कर गहरी नींद सो गई।

तब अल्लाह तआला ने योरोपियन क़ौमों को धरती आकाश के राज खोलने के लिए मुन्तख़ब किया। वह क़ौम जो इस्लाम के उदय के आठ नौ सौ साल बाद तक अधंकार में डूबी हुई थी अब अल्लाह की मर्जी से जागी और प्रकाश की ओर बढ़ना शुरू किया। उन्होंने आरम्भ में अपने बच्चों को मुस्लिम हुकूमतों के ज़रिए क़ायम किए हुए स्कूलों में शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजा। दूसरे चरण में मुस्लिम दार्शनिकों की लिखी पुस्तकों का अनुवाद अपनी भाषा में कराया। तदोपरांत उनकी लगन और इल्म के प्रति उनके शौक़ के नतीजे में अल्लाह तआला ने प्रकृति के नये–नये नियम खोलना आरंभ किए जिनकी बुनियाद पर नये नये आविष्कार होने लगे। अल्लाह तआला को अपनी बनाई हुई क़ायनात के राज पुर्व निर्धारित योजना के अनुसार खोलने ही थे जो क़ौम भी इस काम का बोझ उठाने के लिए तैयार मिली उस पर नित नये ज्ञान की वर्षा ख़ालिके क़ायनात की तरफ़ से होने लगी और वर्तमान समय में तो यह वर्षा तूफानी शक्ल अख़्तियार कर चुकी है। इल्म की अब इतनी अधिक शाखायें फैल चुकी हैं कि किसी एक व्यक्ति के लिए किसी एक शाख़ का भी पूरी तरह माहिर होना सम्भव नहीं रहा। इसी को तो कुरआन पाक में फरमाया गया है– *''निकट भविष्य में हम तुम्हें अपनी निशानियां दिखायेंगे, अतंरिक्ष में भी और तुम्हारे भीतर भी'' (सूरः हामीम सजदा आयत 53)* और यह भी फरमाया किः *हमारी बातें खत्म न होंगी चाहे सातों समंदर स्याही बन जायें और सारे वृक्ष क़लम बना दिये जायें।*

(सूरः लुकमान आयत 27)

संतोष की बात है कि वर्तमान समय में मुसलमानों में पुनः जागरूकता देखने को मिल रही है, वे ख़्वाबे ग़फ़लत से जाग रहे हैं, उन्होंने फिर से कुरआन पाक के चैलेंजेज़ को समझना आरम्भ किया है। अब वो भी शिक्षा और ज्ञान के महत्व को समझने लगे हैं मगर आबादी की तुलना में अभी उनका अनुपात बहुत कम है।

यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य यह भी है कि जो लोग ज़िन्दगी से जुड़ी आधुनिक शिक्षा की ओर मुतवज्जे होते हैं वे कुर्आन व हदीस की तालीम से बहुधा दूर हो जाते हैं, यह बड़ी चिन्ता का विषय है। हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि सामाजिक जीवन से जुड़ी आधुनिक शिक्षा का लाभ हमें केवल इस दुनिया में प्राप्त होगा, उससे हमारा परिवार, हमारा समाज और पूरी क़ौम लाभांवित हो सकती है। मगर इस जीवन के बाद आखिरत की स्थाई जिंदगी में कामयाबी कुरआन व हदीस की रहनुमाई पर ही निर्भर है। लिहाजा प्रत्येक मुसलमान मर्द–औरत पर दोहरी ज़िम्मेदारी है। उन्हें तो दीन व दुनिया दोनों ही में सफल होने के लिए दोनों ही प्रकार की शिक्षा को प्राप्त करने का प्रयास करना होगा ।

अब तो मदरसों की तालीम हासिल करने के साथ साथ स्कूल कालेज की सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, चिकित्सा, इंजीनियरिंग इत्यादि की तालीम हासिल करना भी संभव हो गया है। जिससे मदरसों के बच्चों को ज़रूर ही फ़ायदा उठाना चाहिए। इसके लिए विभिन्न भाषाओं को सीखने पर विशेष ध्यान देना होगा। इस ज़माने में विश्व स्तर की मुख्य भाषा इंग्लिश है, इंग्लिश के बिना आधुनिक काल की शिक्षा प्रणाली में सफलता पाना लगभग असम्भव है। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि क्षेत्रीय भाषाओं का भी अपना विशेष महत्व होता है, जिसकी तरफ़ हमारे मदरसों में बहुत बेतवज्ज़ही बरती जाती है। हम जिस इलाके में रहते हैं वहां की क्षेत्रीय भाषा हिन्दी है, साथ ही हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा भी है अतः हमें हिन्दी पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। इस तरह मुस्लिम बच्चों को तीन चार भाषायें सीखना बहुत ज़रूरी है।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

–मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

–अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

यूरोपियन उलमा के समर्थनः–

हदीसों में औरत व मर्द के दरमियान बयान किये हुए फर्क की हक़ीक़त का एहसास अब भौतिक वैज्ञानिकों को भी होने लगा है। इसी तरह अल्लामा इब्ने कय्यिम (रह०) की बयान की हुई हक़ीक़तों का समर्थन मौजूदा दौर के मनोवैज्ञानिकों और भौतिक वैज्ञानिकों के अकवाल से भी होता है किताब ''दाइरतूल मआरिफुल कुबरा लित्तासे अशर'' (उन्नीसवीं सदी की बड़ी इन्साइक्लोपीडिया) में डॉ० ''दुफारिनी'' का ये बयान लिखा गया है किः– ''औरत शारीरिक रूप से (3/1) के बराबर मर्द से कमज़ोर होती है और उसकी हरक़तों में भी चुस्ती और संतुलन की कमी होती है। उसका दिल भी जो जिंदगी का केंद्र है। 60 ग्राम के बराबर मर्द से छोटा और हल्का होता है। और उसके साँस का सिस्टम भी मर्द से कमज़ोर होता है और गर्मी भी कम होती है। क्योंकि ये बात साबित हो चुकी है कि मर्द की एक घंटे में 11 ग्राम गर्मी कम होती है। और औरत की 6 ग्राम से कुछ जायद। (दाइरतुल मआरिफ लेखक फरीद वजदी पृष्ठः 599–600 जिल्दः8)

पश्चिमी कौमों की घरेलू ज़िन्दगी और सोचने का अंदाज़ के कुछ नमूने और बहुविवाह की जरूरतः–

पश्चिमी देशों जहां से बहुविवाह के विरोध का बिगुल बजाया गया और इसे औरत पर ''जुल्म'' करार दिया गया है। आइये देखें वहाँ औरत के साथ कितना इंसाफ होता है और वहाँ के इंसाफ पसंद निष्पक्ष चिंतक विद्वान और सच्चाई को पसंद करने वाले किस तरह सोचते हैं। सबसे पहली और क़ाबिले गौर बात तो ये है कि बहुविवाह की मनाही किसी मजहब और मुल्क में मौजूदा वैचारिक व यौन इच्छा पहले नहीं रही ''नैतिकता व धर्म की इनसाईक्लोपेडिया'' का लेखक लिखता हैः– ''ईसाइयत के शुरू–शुरू के दाईयों ने बहुविवाह की भी बुराई नहीं की तौरेत में बहुविवाह की मनाही नहीं की गई और न बाईबिल में ही मनाही मौजूद है। पुराने यहूदियों के यहाँ इसका रिवाज पाया जाता था चुनाँचे यहूदी उलमा इसको अपनी परम्पराओं के विरुद्ध नहीं समझते। इस दौर के मशहूर सीरियन रिसर्च स्कॉलर डॉ० मुस्तफा सिबाई मरहूम (जिन्हों ने यूरोप के भी कई सफर किये। फिर अपने अनुभवों और ब्रिटेन और दूसरे पश्चिमी देशों में प्रकाशित लिट्रेचरों की रौशनी में एक भहुत ही अहम किताब ''अल–मरअतु बैनल फिक्ह वल कानून'' तर्तीब दे कर अरबी जुबान में पेश की है) ने लिखा हैः– ''इस्लाम ही ने सब से पहले बहुविवाह की इज़ाज़त नहीं दी है बल्कि तकरीबन सारी प्राचीन क़ौमों जैसे यूनानियों, चीनियों, हिन्दुओं, बाबुलियों, आशूरियों और मिस्रियों में भी इसका रिवाज मौजूद था। और उनमें अक्सर क़ौमों के यहाँ बीवियों की तादाद भी कोई सीमित निर्धारित न थी चीनी धर्म ''लेकी'' में एक सौ तीस तक बीवियाँ रखने की इज़ाज़त थी और कुछ चीनी सरदारों के यहाँ तो लगभग तीन हज़ार औरतें थीं। इसके अलावा यहूदी धर्म में भी बिना किसी सीमा के बीवियां रखने की इजाज़त थी तौरेत के सभी नबियों के यहाँ बहुत सी बीवियों का पता चलता है। (अल–मरअतु बैनल फिक्ह वल कानून, पृष्ठः 71)

❖❖❖

दुआ-ए-मग़फ़िरत की दरख़्वास्त

सहारनपुर जिले के एक मशहूर बुजुर्ग आलिम–ए–दीन हज़रत मौलाना हकीम सय्यद मुकर्रम हुसैन साहब संसारपुरी अपने पैतृक गाँव संसारपुर में 22 जुलाई, 2022 को जुमे की नमाज़ से पहले 88 साल की उम्र में अल्लाह को प्यारे हो गये, ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राज़िऊन''। वह रायपुर के एक बहुत बड़े बुजुर्ग और मशहूर आलिम–ए–दीन और अल्लाह के वली–ए–कामिल हज़रत मौलाना अब्दुल कादिर साहब रायपुरी के खलीफ़ा और हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 के पीर भाई थे, सादगी, हक़ बयानी, न्याय और सुन्नत व शरीअ़त पर अमल उनकी ज़िन्दगी का हिस्सा था, वह तक्वा व परहेज़गारी के उच्च पायदान पर थे वह बिना किसी भेदभाव के हर एक के दुख दर्द में बराबर के शरीक और समाज सुधार के कामों में आगे आगे रहा करते थे और काम करने वालों की सराहना करके हिम्मत बढ़ाते थे, इन्हीं कारणों से वह आम जन मानस में बड़े लोकप्रिय और महबूब थे दूर व करीब के हज़ारों अकीदतमंद जिस प्रकार उनसे उनकी ज़िन्दगी में मिलने और रहनुमाई हासिल करने आया करते थे उससे कहीं ज़ियादा इस दुख की घड़ी में उनके पैतृक गाँव पहुंच कर उनके परिजनों से संवेदना व्यक्त कर रहे हैं। और जो नहीं पहुंच पा रहे हैं वह सोशल मीडिया और दूसरे माध्यमों से उनके परिजनों को सांतवना दे रहे हैं यह सिलसिला बराबर जारी है।

यह अफसोसनाक खबर जैसे ही हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा व अध्यक्ष आल इंण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ को पहुंची हज़रत ने तुरन्त एक प्रेस नोट जारी करते हुए अपने गहरे रंज व ग़म और तअल्लुक़ का इज़हार किया और उनके मग़फ़िरत और बलन्द दरजात के लिए दुआ फरमाई और आपने फरमाया कि अल्लाह की जात में लीनता और आत्म त्याग उनकी खास विशेषता थी। इधर कुछ दिनों से अपने पैरों की तकलीफ़ की वजह से माजूर और विवश हो गये थे लेकिन दूर व करीब के लोग आखरी सांस तक बराबर उनसे फायदा उठाते रहे। उनके निधन से जो जगह रिक्त हुई है उसका पुर होना मुश्किल है।

उनके परिजनों में 5 बेटे और दो बेटियाँ है, अल्लाह उनको सब्र अता फरमाये आमीन! हम अपने समस्त पाठकों से उनकी मग़फ़िरत और बलंद दरजात की दुआ की दरख्वास्त करते हैं। ◆◆◆

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हों, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

इस्लाम का पैग़ाम हर-हर व्यक्ति को पहुँचाएँ

मौलाना सय्यद मुहम्मद हम्ज़ा हसनी नदवी

इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि सब से बड़ी ज़िम्मेदारी हमारी है, हम इस सूरते हाल को बदलें, और उसको इस्लाम के साँचे में ढ़ाल कर सरापा मुहब्बत बन जाएं और इस्लाम का पैग़ाम हर हर व्यक्ति को पहुँचाएं और यह साबित करें कि इस्लाम ही एक ऐसा तिर्याक़ है जो हर क़िस्म के ज़हर को ख़त्म कर सकता है और उसी के साये तले इंसानियत ज़िन्दा रह सकती है, रहमतुल्लिलआलमीन हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की पाक ज़िन्दगी का नमूना हमारे सामने है, अगर हम इस नमूने को अपने सामने रख कर अपनी ज़िन्दगी नहीं गुज़ारेंगे तो चाहे हम जितने बड़े मुजाहरे करें, बंद मनाएं, जुलूस निकालें, हम को क़तई कामयाबी नहीं मिलेगी, क्यों कि मुसलमान इस्लाम की जंजीर से बंधी हुई क़ौम है जिसका सिरा नबी–ए–अरबी सरवरे कायनात रहमतुल लिलआलमीन सल्ल0 के मुबारक हाथों में है। और जो इस मुबारक ज़ंजीर से मुंसलिक रहेगा, कामयाब होगा, और जो उस ज़ंजीर से अलग होगा, और नया रास्ता इख़्तियार करेगा, वह रुसवा और बरबाद होगा, अल्लाह तआला हम सबको सीधे रास्ते पर चलना नसीब फरमाये। आमीन! ◆◇◆

सम्पादक सच्चा राही को सदमा (इदारा)

सम्पादक महोदय के छोटे भाई मुहम्मद सलमान ''मोहतरम'' की बीवी एक लम्बी बीमारी के बाद 5 अगस्त, 2022 को जुमे की नमाज़ के बाद अपने मालिके हक़ीक़ी से जा मिलीं ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राज़िऊन''।

मरहूमा एक ज़िम्मेदार, सलीकेमंद बड़ी सूझ–बूझ वाली, नमाज़ रोज़े की पाबन्द इबादत गुज़ार खातून थीं, मरहूमा ने शौहर की इताअत व फरमाँबरदारी को अपना पहला कर्तव्य समझा, फरमाईश और शिकवा, शिकायत से ज़िन्दगी भर अपने को दूर रखा। घर खानदान के छोटे बड़े सब का बड़ा ख़्याल रखा, पूरी ज़िन्दगी सब्र व शुक्र के साथ गुज़ारा, और घरेलू ज़िन्दगी के हर ऊँच नीच को बड़ी खूबी से निभाया। अल्लाह उनको जन्नतुल फिरदौस में आला मक़ाम अता फरमाये।

मरहूमा की पहली नमाज़ जनाज़ा हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी नाजिम नदवतुल उलमा ने बाद मग़रिब नदवतुल उलमा में पढ़ाई उसके बाद जनाज़ा उनके पैतृक गाँव मौजा जौरास, बाराबंकी ले जाया गया जहाँ उनके दूर व करीब के रिश्तेदार, गाँव जवार के लोग उनके घर पहुँच कर उनके परिजनों से संवेदना व्यक्त कर रहे थे और गंगा जमुनी तहज़ीब का नजारा पेश कर रहे थे, रात 10 बजे दूसरी जनाज़े की नमाज़ अदा की गयी और 11 बजे के बाद उनको सुपुर्दे ख़ाक किया गया।

मरहूमा ने अपने पीछे शौहर के अलावा पाँच लायक़ बेटे (अब्दुर्रहमान, उबैदुर्रहमान, फज़लुर्रहमान, अताउर्रहमान व मुहम्मद नोमान) छोड़े जिनमें से दो माशाअल्लाह हाफिज़े कुर्आन हैं और शिक्षा दीक्षा के काम में लगे हुए हैं और कुछ अभी शिक्षा हासिल कर रहे हैं। अल्लाह सबको सब्र अता फरमाय, हम अपने समस्त पाठकों से दुआ की अपील करते हैं। ◆◇◆

कहाँ ले जाएगी अतीत से मुँह चुराने की मुहिम

स्कूली किताबों से इतिहास के अप्रिय तथ्य हटा कर हम नई पीढ़ी में सही दृष्टि विकसित नहीं कर सकते

मधुसूदन आनन्द

हाल ही में दिल्ली के एक अंग्रेज़ी अखबार द्वारा एनसीईआरटी (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद) की स्कूली पाठ्य पुस्तकों में संशोधन के नाम पर ऐतिहासिक तथ्यों को हटाने के रहस्योद्घाटन से शायद ही किसी को आश्चर्य हुआ होगा। सभी जानते हैं कि सत्तारूढ़ पार्टी ही नहीं, पूरा संघ परिवार अतीत के भारत को अच्छा, सुनहरा और आदर्श दिखाने के लिए हमेशा से प्रतिबद्ध रहा हैं उसे गजनी और गजनवी जैसे आक्रांताओं की लूट और मुसलमान शासकों के राजकाज के ऐतिहासिक तथ्य जरा भी नहीं सुहाते। न ही वह यह स्वीकार करने को तैयार है कि भारत की वर्ण व्यवस्था और जात पांत के कलुषित दाग आने वाली पीढ़ियों को दिखाई पड़ें। संघ परिवार मानता है कि अंग्रेजी इतिहासकारों और उनसे प्राभावित वामपंथी इतिहासकारों ने देश के इतिहास को तोड़ मरोड़ कर पेश किया है। वह प्राचीन और मध्यकालीन युग का अपना अलग इतिहास लिखवाने की बात करता है।

क्या–क्या निकालाः–

जब नया इतिहास लिखा जाएगा तब लिखा जाएगा पर अभी तो भारत की गौरवगाथा को कलंकित करने वाले तथ्यों को एनसीईआरटी की पाठ्य पुस्तकों से बाहर निकालना ही केन्द्र के पास एक मात्र उपाय है जिसका जोरदार ढंग से प्रयोग भी किया जा रहा है। आइए देखें कि क्या–क्या निकाला गया है। दिल्ली के इस अंग्रेजी अख़बार की पड़ताल से पता चला कि सातवीं कक्षा की इतिहास की पाठ्य पुस्तक से दिल्ली सल्तनत (जिसमें तुगलक वंश, खिलजी वंश, लोदी वंश आदि के साथ–साथ मुगल भी आते हैं) से संबद्ध अनेक पेज निकाल दिए गए हैं। पुस्तक से दिल्ली सल्तनत के दक्षिण में विस्तार से संबंधित तीन पेज हटा दिए गए हैं। मस्जिद किसे कहते हैं, जामा मस्जिद बनाने का मतलब क्या होता है, इमाम का चयन किस तरह होता है, नमाज़ के दौरान नमाज़ी मक्का (मुस्लिमों का तीर्थस्थल) की तरफ मुंह करके इबादत करते हैं यह सारा विवरण हटा दिया गया है। इसी तरह सातवीं कक्षा की इतिहास की पुस्तक के एक अध्याय 'मुगल साम्राज्य' में से दो पन्ने हटा दिए गये हैं, जिनमें मुगलों की उपलब्धियों का ब्यौरा था। 12वीं की इतिहास की पाठ्य पुस्तक से 'किंग्स एंड क्रॉनिकल्सः द मुगल कोर्ट' नामक अध्याय हटा दिया गया है। इस अध्याय में 'अकबरनामा' और 'बादशाहनामा' जैसी ऐतिहासिक पांडुलिपियों का उल्लेख था और मुगलों के युद्ध, उनकी शिकार गाथा राज–दरबार और भवन निर्माण संबंधी उनके काम को दर्शाया गया था।

सोमनाथ पर हमला करने वाले अफगानिस्तान के महमूद गजनवी से संबंधित एक विवरण में पहले उसके नाम के आगे लिखे शब्द 'सुल्तान' को हटाया गया। पाठ्य पुस्तक में लिखा था कि गजनी लगभग हर वर्ष ही गुजरात और सोमनाथ के मन्दिर पर हमले किया करता

था। इस वाक्य को हटा कर नया वाक्य यह लिखा गया है कि गजनी ने सन् 1000–1025 के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप पर धार्मिक उद्देश्य से 17 बार आक्रमण किए। इस संशोधन को काफी हद तक सही माना जा सकता है, जिससे हमले का उद्देश्य लूट के बजाय धार्मिक विजय पाने के दावे सरीखा हो जाता है। महमूद गजनवी ने भारत के लोगों को जानने समझने और उसे अरबी भाषा में लिखने के लिए अल बैरूनी नामक एक विद्वान को नियुक्त किया था, जिनकी पुस्तक किताब–उल–हिन्द को तमाम इतिहासकार एक महत्वपूर्ण स्रोत मानते हैं। पाठ्य पुस्तक में इससे संबंधित एक पूरा पैरा हटा दिया गया है।

प्राचीन भारतीय समाज का दूसरा कलंक शूद्र, दलित जातियों और महिलाओं के साथ होने वाला व्यवहार रहा है। यही कारण है कि एनसीईआरटी की समाज विज्ञान की पुस्तकों में से ये वाक्य हटा दिए गए हैं 'दलित लोग खेतिहर मजदूरी, मैला ढोने और चमड़े का काम करने के अपने पारंपरिक पेशा को अपनाने के लिए अभिशप्त थे'। अल्पसंख्यकों को इस खतरे का सामना करना ही पड़ेगा कि एक दिन बहुसंख्यक समुदाय राजनैतिक सत्ता पर नियंत्र कर लेगा और फिर उनके धार्मिक या सांस्कृतिक प्रतिष्ठानों पर कब्जा करने के लिए राज्य की मशीनरी का इस्तेमाल करेगा।

अंग्रेज़ी अखबार की जांच का निष्कर्ष है कि एक न्यायपूर्ण समाज बनाने की धारणा को मजबूत करने के लिए कक्षा 6 से ले कर कक्षा 12 तक की राजनीतिशासत्र और सामाजिक विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों में निचली जातियों और अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव के जिन तथ्यों को शामिल किया गया था, उन्हें हटा दिया गया है।

यह भी पता चला है कि पाठ्य पुस्तकों में 'इमरजेंसी' से संबंधित विवरण भी हटा दिया गया है। यह सभी को आश्चर्यजनक लगा है क्योंकि इमरजेंसी के लिए इंदिरा गाँधी को दिन–रात कोसने वाली बीजेपी किसी विषेश कारण के, अपने ही ब्रह्मशास्त्र को अलग रखना चाहती है। सभी जानते हैं कि हमारे देश में लोकतंत्र को काफी हद तक नाकारा बना दिया गया है। संवैधानिक संस्थाओं का इकबाल पहले की तरह बुलंद नहीं है और सरकार पर खुद नागरिक स्वतंत्राओं का स्पेस कम से कमतर करने के आरोप लगे हैं। तो आप भी एक स्तर पर वही गलतियां कर रहे हैं जो अपने शासन को जारी रखने के लिए इंदिरा गांधी ने की थी। इसी तरह गुजरात के 2002 के दंगों का कलुष छिपाने के लिए भी संबंधित सामग्री को हटा दिया गया है। बेशक प्रधानमंत्री को सुप्रीम कोर्ट से क्लीन चिट मिल गई है, मगर इन दंगों के कलुष को कोई भी कपड़ों पर गिरी बीट समझ कर झाड़ नहीं सकता।

गहरा है अपराधबोधः–

सच्चा इतिहास हमें अपने और अपने देश को समझने की एक वैज्ञानिक दृष्टि से लैस करता है। अप्रिय चीज़ों को किताबों से हटा कर हम अपने भावी नागरिकों में गौरव और उत्साह भरना चाहते हैं लेकिन जिस अपराधबोध को ले कर हम ज़िन्दा हैं और अपने अतीत पर सफेद रंग पोतना चाहते है, वह दुर्भाग्य से हमारे डीएनए में, हमारी मानसिकता में समाया हुआ है। ज़रूरी है कि हम भावी पीढ़ी के भविष्य को तमाम ग्रंथियों से मुक्त करने के लिए मानवीय मूल्यों की लंबी लकीर खींचें और अतीत से सबक लें।

(नव भारत टाइम्स 27 जून 2022 से ग्रहीत)

❖❖❖

जवाँ साल आलिमे दीन मौलाना महमूद हसनी नदवी अल्लाह के जवार में

''सच्चा राही'' के पाठकों को यह कष्ट जनक ख़बर दी जा रही है कि नदवतुल उलमा के अर्द्धमासिक उर्दू पत्रिका ''तामीर हयात'' के उप सम्पादक मौलाना महमूद हसनी नदवी का 12 अगस्त, 2022 ई0 को 9:30 बजे सुब्ह लखनऊ के मैट्रो सिटी हास्पिटल में इन्तिक़ाल हो गया ''इन्नालिल्लाहि व इन्नाइलैहि राजिऊन'' मौलाना मरहूम बहुत सी किताबों के लेखक थे, मौलाना महमूद का विशेष विषय इस्लामी इतिहास और बुजुरगाने दीन की जीवनी, मौलाना बहुत धारा प्रवाह के साथ लिखते थे यही वजह है कि कम समय में बीसों किताबें लिख डालीं, मौलाना महमूद मरहूम की शिक्षा और दीक्षा अपने नाना हज़रत मौलाना मुहम्मद सानी हसनी नदवी और छोटे नाना मुर्शिदे उम्मत हज़रत मौलाना सै0मु0 राबे हसनी नदवी की संरक्षता में हुई। मौलाना महमूद के शोक में शहर के बहुत से इल्मी दीनी हलकों में सभाएं हुईं, बड़ी संख्या में लोगों ने मरहूम के लिए दुआए मग़फ़िरत और ईसाले सवाब किया, शोब–ए–दअ़वते इरशाद में एक शोक सभा आयोजित हुई, जिसमें ''सच्चा राही'' के सम्पादक और उप सम्पादक एवं शोब–ए–इस्लाह मुआशरह के इंचार्ज मौलाना अब्दुल वकील नदवी और मौलाना मुहम्मद आमिर नदवी इंचार्ज इन्टरनेट सेक्शन और मौलाना आफताब आलम नदवी ख़ैराबदी मुबल्लिग़ नदवतुल उलमा ने शिरकत की और सब ने मौलाना महमूद मरहूम की इल्मी व दीनी विशेषताओं और गुणों का ज़िक्र किया, अल्लाह तआला मरहूम की दीनी ख़िदमात को कुबूल फ़रमाए और जन्नत में आला मुक़ाम अता फ़रमाए। आमीन!

❖❖❖

अलसी के छोटे बीजों में छिपे सेहत के बड़े लाभ

डॉ0 सीएम पांडेय, आयुर्वेदाचार्य

आप अलसी का उपयोग कर अनेक रोगों की रोकथाम कर सकते हैं। अलसी को तीसी के नाम से भी जाना जाता है। यह एक जड़ी–बूटी है, जिसका इस्तेमाल औषधि के रूप में भी किया जाता है। स्थानों की प्रकृति के अनुसार, तीसी के बीजों के रंग रूप और आकार में भी अंतर पाया जाता है। आमतौर पर लोग तीसी के बीज के तेल को उपयोग में लाते हैं, तीसी के प्रयोग से सांस, गला, कंठ, कफ, पाचनतंत्र विकार सहित घाव, कुष्ठ आदि रोगों में लाभ लिया जा सकता है।

हृदय रोग कम करने में मददगारः–

अलसी में ओमेगा–3 फैटी एसिड, प्रोटीन, फाइबर, विटामिन्स और मिनरल्स पाए जाते हैं। यही वजह है कि अलसी के बीज पाचन को बेहतर बनाते हैं। अलसी के बीज हृदय रोग के खतरे को भी कम करने में मदद करते हैं।

कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित करने में फायदेमंदः–

अलसी के बीज में हाई फाइबर और लिगनेन कंटेंट होता है। इसे खाने से आपका कोलेस्ट्रॉल का लेवल 6 से 11 प्रतिशत तक कम हो सकता है।

हार्मोनल बैलेंस को बनाए रखने में मददगारः–

अलसी में लिंग्नास होता है। वह एस्ट्रोजन और ऐंटीऑक्सिडेंट से युक्त होता है, जो महिलाओं के हार्मोनल बैलेंस को बनाए रखने में मददगार होता है।

पाचन शक्ति बेहतर करेः–

अलसी का नियमित सेवन करने से आप पाचन शक्ति को बढ़ा सकते हैं। अलसी में पर्याप्त मात्रा में फाइबर होता है, जो पाचन शक्ति को बढ़ा कर कब्ज़ की समस्या को दूर करता है।

त्वचा के लिए फायदेमंदः–

अलसी में ऐंटीऑक्सी–डेंट्स और फाइटोकैमिकल्स गुण पाए जाते हैं, जो बढ़ती उम्र में चेहरे की त्वचा को जवां बनाए रखते हैं, जिससे झुर्रियों की समस्या नहीं होती और हमारी त्वचा चमकदार बनी रहती है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएः–

अलसी के बीज का उपयोग करने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। इसके बीज एंटी वायरल, एंटी फंगल, एंटी बैक्टीरियल होते हैं।

आप अलसी को खाली पेट खा सकते हैं। इसके अलावा रात में सोने से पहले भी अलसी का सेवन किया जा सकता है, क्योंकि यह अच्छी नींद लाने में भी मदद करती है। साबुत अलसी के बीज खाने के बजाय पीस कर खाना ज़ियादा फायदेमंद होता है।

(डेस्क एन.बी.टी., लखनऊ से ग्रहीत)

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

UNSC में भारत की स्थायी सदस्यता को चार देशों का साथ, पड़ोसी देश चीन अभी भी लामबंदः—

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद UNSC के पाँच स्थायी सदस्यों में से चार ने स्थायी सीट के लिए भारत की सदस्यता का समर्थन किया है। सरकार ने शुक्रवार को लोकसभा के मानसून सत्र के दौरान यह जानकरी दी। UNSC के पाँच स्थायी सदस्यों में संयुक्त राज्य अमेरिका, रूसी संघ, फ्रांस, चीन और यूनाइटेड किंगडम हैं। लोकसभा में एक सवाल का जवाब देते हुए विदेश राज्य मंत्री वी मुरलीधरन ने कहा कि चीन को छोड़ कर अन्य सभी देशों ने भारत की सदस्यता का समर्थन किया है। बता दें कि वर्तमान में यूएनएससी में पाँच सदस्य और 15 गैर स्थायी सदस्य देश शामिल हैं। गैर स्थाई सदस्यों को महासभा की ओर से दो साल के कार्यकाल के लिए चुना जाता है। वहीं, पाँच स्थायी सदस्य देश यूएनसीएस में किसी भी प्रस्ताव को वीटो कर सकते हैं। फिलहाल भारत, ब्राजील, जर्मनी, जापान और दक्षिण अफ्रीका संयुक्त सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्य के प्रबल दावेदार हैं।

धरती से चन्द्रमा और मंगल तक 'बुलेट ट्रेन' चलाएगा जापानः—

टोक्योः दुनिया में स्पेस के लिए रेस चल रही है। मुकाबला है अंतरिक्ष में सबसे पहले अपने पैर जमाने का। कोई चाँद पर बेस बनाना चाहता है तो कोई मंगल ग्रह पर कॉलोनी। इस बीच काजिमा कंस्ट्रक्शन की मदद से जापान की क्योटो यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने एक कृत्रिम अंतरिक्ष शहर और पृथ्वी, चंद्रमा और मंगल को जोड़ने वाली इंटर—पलेनेटरी ट्रेनों के निर्माण की घोषणा की है। वैज्ञानिक अब सिर्फ अंतरिक्ष में जाने का सपना नहीं देख रहे बल्कि नए दौर की स्पेस रेस है जो शुरु हो चुकी है।

मिस्र के विदेश मंत्री ने किया संयुक्त राष्ट्र जलवायु वार्ता में समझौते के लिए तैयार रहने का आह्वानः—

बर्लिन, 19 जुलाई (एपी) मिस्र के विदेश मंत्री समेह शौकरी ने अमीर और विकासशील देशों से आह्वान किया कि उन्हें नवम्बर में होने वाली संयुक्त राष्ट्र जलवायु वर्ता में समझौता करने के लिए तैयार रहना चाहिए तथा यह वार्ता संम्पन्न और गरीब देशों के बीच कार्बन उत्सर्जन सम्बंधी ''अपनी जीत के खेल'' में तब्दील नहीं होनी चाहिए।

शौकरी ने यह आह्वान तब किया जब बर्लिन में 40 देशों के अधिकारियों ने दो दिवसीय एक बैठक की। उन्होंने कहा कि इस बैठक से मिस्र के अधिकारियों को मुद्दे पर अच्छी समझ विकसित करने में मदद मिली जिस पर ''हम सभी की ओर से'' नवम्बर में मिस्र के शर्म अल शेख में होने वाली संयुक्त राष्ट्र जलवायु वार्ता में और अधिक काम किए जाने की ज़रूरत है।

कार पार्किंग में सब्जियाँ उग रहींः—

सिंगपुर में जगह जगह बड़ी—बड़ी कार पार्किंग की छतों पर हरियाली छाई हुई है, जहां पर सब्जी उगाई जा रही है। सरकार ने साल 2020 से ही लोगों को ये जगहें लीज पर देना शुरु कर दिया था ताकि शहर के लोगों के लिए सब्जियाँ उगाई जा सकें। अभी ज़रूरत की 90 प्रतिशत सब्जियाँ विदेश से मंगवानी पड़ती है।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25/12/2021 _____ تاریخ

स्टॉफ़ क्वाटर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वाटर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्ड़िंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वाटर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वाटर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआ़ला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरु कर दी गयी है।
नये स्टॉफ क्वाटर्स की यह बिल्डिंग तीन मंजिला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वाटर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/– (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

हमें अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरा भरोसा है कि उसकी मदद से यह काम मुकम्मल होगा।

मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
–:तअ़मीरः–
A/C No. 10863759733

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/0795
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2021 To 2023
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 21 - Issue 07

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE

Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983